INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RO/ARO

समीक्षा अधिकारी / सहायक समीक्षा अधिकारी

LATEST EDITION

HANDWRITTEN NOTES

उ. प्र. लोक सेवा आयोग

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

भाग-5 भारतीय अर्थव्यवस्था + कम्प्यूटर

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

उ.प्र. RO /ARO

समीक्षा अधिकारी / सहायक समीक्षा अधिकारी

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग – 5

भारतीय अर्थव्यवस्था + कम्प्यूटर

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स ***"उ. प्र. समीक्षा अधिकारी/ सहायक समीक्षा अधिकारी (RO/ARO)"*** *को एक विभिन्न अपने - अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को* ***उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)*** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा* ***"उ. प्र. समीक्षा अधिकारी/ सहायक समीक्षा अधिकारी" परीक्षा – 2023-24*** *में पूर्ण संभव मदद करेंगे।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स मे कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं। अतः आप सूची पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/d5wdiv

Online Order करें - https://shorturl.at/besw4

मूल्य : (₹)

संस्करण : नवीनतम (2023-24)

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	अर्थशास्त्र	
1.	अर्थव्यवस्था और अर्थशास्त्र	1
2.	राष्ट्रीय आय	8
3.	संवृद्धि एवं विकास का आधारभूत ज्ञान	21
4.	भारत में आर्थिक नियोजन एवं आर्थिक सुधार	33
5.	गरीबी, बेरोजगारी एवं असामनता, स्वास्थ्य सेवा एवं नई शिक्षा नीति	41
6.	मुद्रास्फीति – अवधारणा, प्रभाव एवं नियंत्रण तंत्र	61
7.	मुद्रा एवं बैंकिंग	67
8.	लोक वित्त	92
9.	वस्तु एवं सेवा कर	106
10.	राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ	110
11.	भारतीय कृषि में वृद्धि एवं उत्पादकता	115
12.	भारत में सिंचाई व्यवस्था	119
13.	खाद्य सुरक्षा एवं खाद्य प्रबंधन	126
14.	केंद्र – राज्य वित्तीय संबंध	132
15.	औद्योगिक क्षेत्र	137
16.	केंद्र सरकार की योजनाएं	147
17.	सतत् विकास एवं जलवायु परिवर्तन	152

	कंप्युटर	
1.	कंप्युटर का विकास	157
2.	इनपुट और आउटपूत युक्तियाँ	161
3.	कंप्युटर मेमोरी	173
4.	वर्ड प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर	181
5.	स्प्रेडशीट सॉफ्टवेयर	187
6.	माइक्रोसॉफ्ट पॉवर पॉइंट	192
7.	कॉम्युनिकेशन	197
8.	कंप्युटर सॉफ्टवेयर	198
9.	इंटरनेट	209

अध्याय – I
अर्थव्यवस्था और अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र

परिचयः-

- अर्थशास्त्र एक सामाजिक गतिविधि है जहां लोग वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, स्टॉक, वितरण, व्यापार और उपभोग की सुविधा के लिए एक साथ आते हैं।
- वस्तुओं और सेवाओं का या तो अन्य वस्तुओं और सेवाओं (अर्थात् वस्तु विनिमय) के लिए आदान-प्रदान किया जा सकता है क्योंकि यह प्रथा आदिम अर्थव्यवस्थाओं में प्रचलित थी या उन्हें पैसे के लिए आदान-प्रदान किया जा सकता है जो दुनिया में समकालीन अर्थव्यवस्थाओं के लिए एक प्रथा है।

- Economics (अर्थशास्त्र) शब्द एक Greek word ' Oikonomia ' से उत्पन्न हुआ है । Oikonomia शब्द Oikos and Nomos दो शब्दों से मिलकर बना है ।
- Oikos का अर्थ गृह अथवा परिवार जबकि Nomos का का अर्थ है प्रबंधन। अर्थात् Oikonomia गृह प्रबंधन की प्रक्रिया के अध्ययन से संबंधित है ।
- घर हो या गांव या राष्ट्र-राज्य, सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत वास्तविकता यह है कि लोगों की असीमित जरूरतें होती हैं और जरूरतों को पूरा करने के लिए उपलब्ध संसाधन सीमित होते हैं। इन सीमित संसाधनों के बीच असीमित जरूरतों को कैसे व्यवस्थित करें या कैसे इसका समन्वय करें यही **"अर्थशास्त्र"** कहलाता है
- अब हम अर्थशास्त्र को एक उदाहरण से समझते हैं उदाहरण के लिए हम "भूमि" (Land) को लेते हैं । भूमि एक दुर्लभ संसाधन है। भारत में वैश्विक आबादी का 17.76% है लेकिन वैश्विक भूमि का केवल 2.42% है। इस प्रकार भूमि पर भारी दबाव है। अब 2.42 % भूमि पर 17.76 % जनसँख्या का कैसे उचित उपयोग किया जाये यही अर्थशास्त्र है
- नोट – **"भूमि अधिग्रहण और पुनर्वास और पुनर्वास अधिनियम 2013"** किसानों, उद्योग और अन्य वर्गों के भूमि दावों को संतुलित तरीके से संबोधित करता है।

नोबेल पुरस्कार प्राप्त प्रो. सेमुएल्सन के द्वारा अर्थशास्त्र की परिभाषा निम्न प्रकार दी गई है -

"अर्थशास्त्र इस तथ्य का अध्ययन है कि व्यक्ति और समाज, मुद्रा का प्रयोग करते हुए या न करते हुए दुर्लभ उत्पादक साधनों का चुनाव जिनके वैकल्पिक उपयोग हो सकते हैं, का उपयोग विभिन्न वस्तुओं के समयगत उत्पादन और उनको वर्तमान उपभोग में और भविष्य में विभिन्न व्यक्तियों और समाज के वर्गों में किस प्रकार वितरित करते हैं।

1935 में ब्रिटिश अर्थशास्त्री लियोनेस रॉबिन्स ने इस अनुशासन को 'कमी का विज्ञान (Science of scarcity)' बताया था।

वास्तविक अर्थशास्त्र आर्थिक विश्लेषण का अध्ययन करता है, जो तथ्यों और सांख्यिकीय आंकड़ों पर आधारित है। जब किसी आर्थिक तथ्य का सांख्यिकीय आंकड़ों की सहायता से विवेचन किया जाता है तो इसे हम वास्तविक अर्थशास्त्र कहते हैं। इस प्रकार वास्तविक अर्थशास्त्र का संबंध 'क्या है' से है। दूसरी तरफ आदर्श अर्थशास्त्र 'क्या होना चाहिए' की व्याख्या करता है। आदर्श अर्थशास्त्र मूल्यगत निर्णयों पर आधारित है, जो किसी निर्णय पर पहुंचने के लिए आवश्यक है। समाज के लिए नीति-निर्धारण संबंधी बातें अधिकांशतः आदर्श अर्थशास्त्र के अंतर्गत आते हैं।

आर्थिक विकास

- आर्थिक विकास दो समय बिंदुओं के बीच वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में मात्रात्मक अंतर है। यदि अंतर नकारात्मक है, तो इसे गिरावट कहा जाता है।

आर्थिक नीति

- आर्थिक नीति एक सरकारी नीति है जिसका उद्देश्य अन्य उद्देश्यों के साथ विकास और विकास करना है। इसके कई उपसमुच्चय हैं जैसे राजकोषीय नीति, मौद्रिक नीति, औद्योगिक नीति, कृषि नीति, विदेश व्यापार नीति आदि।

अर्थव्यवस्था

अर्थव्यवस्था किसी देश या क्षेत्र विशेष में अर्थशास्त्र के व्यावहारिक स्वरूप को प्रदर्शित करती है जैसे भारतीय अर्थव्यवस्था, चीनी अर्थव्यवस्था एवं अमेरिकी अर्थव्यवस्था इत्यादि ।

अर्थशास्त्र और अर्थव्यवस्था में अंतर?:-

अर्थशास्त्र	अर्थव्यवस्था
अर्थशास्त्र के अंतर्गत विषय और सिद्धांतों का अध्ययन किया जाता है	अर्थव्यवस्था के अंतर्गत व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

अर्थशास्त्र केवल अध्ययन का क्षेत्र है	अर्थव्यवस्था निष्पादन (Execution) की भूमिका निभाती है।
अर्थशास्त्र के पिता एडम स्मिथ को माना जाता है इनकी किताब (The Wealth of nations) मे अर्थव्यवस्था का विस्तार किया है।	जब हम किसी देश को उसकी समस्त आर्थिक क्रियाओं के संदर्भ में परिभाषित करते है तो उसे अर्थव्यवस्था कहते हैं ।
अर्थशास्त्र की दो शाखाएँ हैं- (i) व्यष्टि अर्थशास्त्र (Micro economics) (ii) समष्टि अर्थशास्त्र (Macro economics)	अर्थव्यवस्था को तीन भागों में बांटा गया है पूँजीवादी अर्थव्यवस्था, समाजवादी अर्थव्यवस्था और मिश्रित अर्थव्यवस्था।

अर्थशास्त्र की शाखाएँ (Branches of economic)

- अर्थशास्त्र की दो शाखाएँ हैं, जो निम्नलिखित हैं-

(i) व्यष्टि अर्थशास्त्र (Micro economics)
(ii) समष्टि अर्थशास्त्र (Macro economics)

व्यष्टि का अर्थ है – सूक्ष्म, छोटा ।

अतः जब अध्ययन अथवा समस्या एक इकाई या अर्थव्यवस्था के एक भाग से संबंधित होती है तो इस अध्ययन विषय को व्यष्टि अर्थशास्त्र कहा जाता है।

समष्टि का अर्थ है - बड़ा।

इस प्रकार जब अध्ययन संपूर्ण अर्थव्यवस्था अथवा संपूर्ण अर्थव्यवस्था के समुच्चयों से संबंधित होता है तो इस अध्ययन विषय को समष्टि अर्थशास्त्र कहा जाता है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र : व्यष्टि अर्थशास्त्र आर्थिक क्रिया की एक इकाई अथवा अर्थव्यवस्था की एक इकाई के भाग या एक से अधिक इकाई के छोटे समूह का अध्ययन है। ग्रीक शब्द 'माइक्रोस' से लिए गए शब्द 'माइक्रोस' का अर्थ है छोटा- यह व्यक्तिगत आर्थिक ऐजेंट के व्यवहार से संबंधित है तथा वस्तुओं और सेवाओं की कीमत निर्धारण की क्रियाओं का नतीजा है। इस प्रकार इसे 'मूल्य सिद्धांत' भी कहा जाता है।

अर्थव्यवस्था की सूक्ष्म जानकारी किसी व्यक्ति, फर्म, घरेलू कार्य आदि की नीति निर्धारण में सहायक होती है (उत्पादन, उपभोग, मूल्य निर्धारण, मजदूरी दर आदि) में सहायता मिलती है।

समष्टि अर्थशास्त्र

समष्टि अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की एक शाखा है, जो किसी देश के आर्थिक समुच्चयों का अध्ययन करती है। समष्टि शब्द ग्रीक भाषा के शब्द 'माक्रोस' (Macro) से लिया गया है, जिसका अर्थ है - बड़ा ।

इस शब्द का प्रचार ब्रिटिश अर्थशास्त्री लार्ड जॉन मैनार्ड कींस की पुस्तक 'The General Theory of Employment Interest and Money', जो 1936 में प्रकाशित हुई, के प्रकाशन के पश्चात् हुआ। 1929 की महान मंदी (Great Depression) ने अर्थशास्त्रियों को विषय को नए तरीके से सोचने के लिए मजबूर किया, जो चहुमुखी था। परिणामस्वरूप समष्टि अर्थशास्त्र सिद्धांत विकसित हुआ। इसे आय तथा रोजगार सिद्धांत भी कहा जाता है।

समष्टि अर्थशास्त्र सभी आर्थिक इकाइयों का समग्र विश्लेषण करता है, जिससे आर्थिक प्रणाली का पूर्ण चित्र प्राप्त हो जाए और बड़े पैमाने पर आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया जा सके।

समष्टि अर्थशास्त्र के विषय क्षेत्र में बाजार व्यवस्था कर प्रणाली, बजट नीतियां, मुद्रा पूर्ति की नीतियां, प्रशासन की भूमिका, ब्याज दर मजदूरी, रोजगार और उत्पादन के प्रभाव का विश्लेषण किया जाता है।

अर्थव्यवस्था के प्रकार:-

A. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था (Capitalist Economy):-

- जिस अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व पाया जाता है तथा वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन निजी लाभ के लिए किया जाता है उसे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था कहते हैं।
- अर्थात् यहाँ आर्थिक गतिविधियों पर सरकार का न्यूनतम नियंत्रण होता है तथा निजी क्षेत्र अधिक प्रभावकारी एवं स्वतंत्र होता है।
- एडम स्मिथ की 'दा वेल्थ ऑफ़ नेशन' पूँजीवाद को दार्शनिक आधार प्रदान करता है।
- अमेरिका समेत पश्चिमी यूरोपीय देश पूँजीवाद के समर्थक हैं।

पूँजीवाद के फायदे या गुण:-

- पूँजीवाद नवाचार को बढ़ावा देता है।
- पूँजीवाद और समाज दोनों स्वतंत्रता और अवसर पर केंद्रित हैं।
- पूँजीवाद आबादी की जरूरतों को पूरा करता है।
- पूँजीवाद स्व-नियामक है।
- पूँजीवाद समग्र रूप से समाजों की मदद करता है।

पूँजीवाद के नुकसान या दोषः-

- धन और आय के वितरण की असमानता
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में अपरिहार्य के रूप में कक्षा संघर्ष
- सामाजिक लागत बहुत अधिक है
- पूँजी अर्थव्यवस्था की अस्थिरता
- बेरोजगारी और रोजगार के तहत
- वर्किंग क्लास में पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा नहीं है ।

B. समाजवाद अर्थव्यवस्था

- उत्पादन एवं वितरण के सामूहिक नियंत्रण पर बल देता है।
- राज्य द्वारा विनियमित निजी क्षेत्र की भूमिका से लोक कल्याण के उद्देश्य की प्राप्ति।
- भारत,बांग्लादेश,ब्राजील,समेत विकासशील अधिकांश देश समाजवाद के समर्थक हैं।
- बौद्ध और जैन धर्म का अस्तेय आवश्यकता से अधिक संसाधनों के एकत्रीकरण का विरोध करता है, जो समाजवाद की अवधारणा के अनुकूल है।
- अशोक के शिलालेखो से लोक कल्याणकारी राज्य के संदर्भ में जानकारी प्राप्त होती हैं, वहीं रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख सुदर्शन झील के निर्माण के संदर्भ में प्रमाण देता है।
- इसी प्रकार मध्यकाल में फिरोजशाह तुगलक द्वारा नहरों का निर्माण, बेरोजगारों के लिए पेंशन जैसी समाजवादी योजनाओं की जानकारी प्राप्त होती है।

समाजवाद के पक्ष में तर्क या गुणः-

शोषण का अन्तः-

- समाजवाद श्रमिको एवं निर्धनो के शोषण का विरोध करता है। इसलिये विश्व के श्रमिक किसान निर्धन इसका समर्थन करते है।

सामाजिक न्याय पर आधारितः-

- समाजवादी व्यवस्था में किसी वर्ग विशेष के हितो को महत्व न देकर समाज के सभी व्यक्तियों के हितो को महत्व दिया जाता है यह व्यवस्था पूँजीपतियों के अन्याय को समाप्त करके एक ऐसे वर्गविहीन समाज की स्थापना करने का समर्थन करती है जिसमें विषमता न्यूनतम हो।

उत्पादन का लक्ष्य सामाजिक आवश्यक्ताः-

- व्यक्तिवादी व्यवस्था में व्यक्तिगत लाभ को ध्यान में रखकर किये जाने वाले उत्पादन के स्थान पर समाजवादी व्यवस्था में समाजिक आवश्यक्ता और हित को ध्यान में रखकर उत्पादन होगा क्योंकिसमाजवाद इस बात पर बल देता है कि जो उत्पादन हो वह समाज के बहुसख्यक लोगो के लाभ के लिए हो।

उत्पादन पर समाज का नियंत्रण :-

- समाजवादियो का मत है कि उत्पादन और वितरण के साधनो पर राज्य का स्वामित्व स्थापित करके विषमता को समाप्त किया जा सकता है।
- सभी को उन्नति के समान अवसर
- साम्राज्यवाद का विरोधी

समाजवाद के विपक्ष में तर्क अथवा आलोचना :-

राज्य के कार्य क्षेत्र में वृद्धि :-

- समाजवाद मे आर्थिक तथा राजनीतिक दोनो क्षेत्रों में राज्य का अधिकार होने से राज्य का कार्य क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत हो जायेगा जिसके परिणामस्वरूप राज्य द्वारा किये जाने वाले कार्य समुचित रूप से संचालित और समपादित नहीं होंगे।

वस्तुओं के उत्पादन में कमी :-

- समाजवाद के आलोचको की मान्यता है कि यदि उत्पादन के साधनो पर सम्पूर्ण समाज का नियंत्रण हो तो व्यक्ति की कार्य करने की प्रेरणा समाप्त हो जायेगी और कार्यक्षमता भी धीरे धीरे घट जायेगी।
- व्यक्ति को अपनी योग्यता का प्रदर्शन करने का अवसर नहीं मिलेगा तो वस्तुओं के उत्पादन की मात्रा घट जायेगी।

समाजवाद प्रजातंत्र का विरोधी :-

- प्रजातंत्र में व्यक्ति के अस्तित्व को अत्यंत श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है वही समाजवाद में वह राज्य रूपी विशाल मशीन में एक निर्जीव पूर्जा बन जाता है।

नौकरशाही का महत्व :-

- समाजवाद में राज्य के कार्यो में वृध्दि होने के कारण नौकरशाही का महत्व बढ़ता है। और सभी निर्णय सरकारी कर्मचारियो द्वारा लिये जाते है ऐसी स्थिति में भ्रष्टाचार बढ़ता है।

समाजवाद हिंसा को बढ़ाता है :-

- समाजवाद अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए क्रांतिकारी तथा हिंसात्मक मार्ग को अपनाता है। वह शांतिपूर्ण तरीको में विश्वास नहीं करता।
- वह वर्ग संघर्ष पर बल देता है। जिसके परिणामस्वरूप समाज में वैमनस्यता और विभाजन की भावना फैलती है।
- पूर्ण समानता संभव नहीं ।

C. मिश्रित अर्थव्यवस्था (Mixed Economy) :-

- यहाँ, उत्पादन की कुछ योजनाएँ राज्य द्वारा सीधे या इसके राष्ट्रीयकृत उद्योगों के माध्यम से शुरू की जाती

है, और कुछ को निजी उद्यम के लिए छोड़ दिया जाता है।

- *इसका अर्थ है कि समाजवादी क्षेत्र (यानी सार्वजनिक क्षेत्र) और पूँजीवादी क्षेत्र (यानी निजी क्षेत्र) दोनों एक-दूसरे के साथ हैऔर एक-दूसरे के पूरक हैं।*
- *इसे बाजार की अर्थव्यवस्था और समाजवाद के बीच आधे घर के रूप में वर्णित किया जा सकता है।*
- *मिश्रित अर्थव्यवस्था में, सार्वजनिक और निजी दोनों संस्थान आर्थिक नियंत्रण का प्रयोग करते हैं। इसलिए, इस प्रकार कीअर्थव्यवस्था पूँजीवाद और समाजवाद दोनों के लाभों को सुरक्षित करने का प्रयास करती है।*

मिश्रित अर्थव्यवस्था के फायदे:-

निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन :-

- *मिश्रित अर्थव्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन प्रदान करता है और इसे बढ़ने का उचित अवसर मिलता है।*
- *यह देश के भीतर पूँजी निर्माण में वृद्धि की ओर जाता है।*

स्वतंत्रता:-

- *मिश्रित अर्थव्यवस्था में, पूँजीवादी व्यवस्था में आर्थिक और व्यावसायिक दोनों तरह की स्वतंत्रता है।*
- *प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पसंद का कोई भी व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता है।*
- *इसी तरह, हर निर्माता उत्पादन और खपत के संबंध में निर्णय ले सकता है।*

संसाधनों का इष्टतम उपयोग:-

- *इस प्रणाली के तहत, निजी और सार्वजनिक दोनों ही क्षेत्र संसाधनों के कुशल उपयोग के लिए काम करते हैं।*
- *सार्वजनिक क्षेत्र सामाजिक लाभ के लिए काम करता है जबकि निजी क्षेत्र लाभ के अधिकतम करण के लिए इन संसाधनों का इष्टतम उपयोग करता है।*

आर्थिक योजना के लाभ:-

- *मिश्रित अर्थव्यवस्था में, आर्थिक योजना के सभी फायदे हैं।*
- *सरकार आर्थिक उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करने और अन्य आर्थिक बुराइयों को पूरा करने के लिए उपाय करती है।*

कम आर्थिक असमानताएँ:-

- *पूँजीवाद आर्थिक असमानताओं को बढ़ाता है लेकिन एक मिश्रित अर्थव्यवस्था के तहत, सरकार के प्रयासों से असमानताओं को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है।*

प्रतियोगिता और कुशल उत्पादन:-

- *निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों के बीच प्रतिस्पर्धा के कारण दक्षता का स्तर उच्च बना हुआ है।*
- *उत्पादन के सभी कारक लाभ की उम्मीद में कुशलता से काम करते हैं।*

सामाजिक कल्याण:-

- *इस प्रणाली के तहत, प्रभावी आर्थिक, योजना के माध्यम से सामाजिक कल्याण को मुख्य प्राथमिकता दी जाती है।*
- *सरकार द्वारा निजी क्षेत्र को नियंत्रित किया जाता है।*
- *निजी क्षेत्र की उत्पादन और मूल्य नीतियां अधिकतम सामाजिक कल्याण प्राप्त करने के लिए निर्धारित की जाती हैं।*

आर्थिक विकास:-

- *इस प्रणाली के तहत, सरकारी और निजी क्षेत्र दोनों सामाजिक-आर्थिक अवसंरचना के विकास के लिए अपने हाथ मिलाते हैं, इसके अलावा, सरकार समाज के गरीब और कमजोर वर्ग के हितों की रक्षा के लिए कई विधायी उपाय लागू करती है।*
- *इसलिए, किसी भी अविकसित देश के लिए, मिश्रित अर्थव्यवस्था सही विकल्प है।*

मिश्रित अर्थव्यवस्था के नुकसान:-

स्थिरता:-

- *कुछ अर्थशास्त्रियों का दावा है कि मिश्रित अर्थव्यवस्था सबसे अस्थिर है।*
- *सार्वजनिक क्षेत्र को अधिकतम लाभ मिलता है जबकि निजी क्षेत्र नियंत्रित रहता है।*

क्षेत्रों की अक्षमता:-

- *इस प्रणाली के तहत, दोनों क्षेत्र अप्रभावी हैं।*
- *निजी क्षेत्र को पूर्ण स्वतंत्रता नहीं मिलती है, इसलिए यह अप्रभावी हो जाता है।*
- *यह सार्वजनिक क्षेत्र में अप्रभाविता की ओर जाता है।*
- *सही अर्थों में, दोनों क्षेत्र न केवल प्रतिस्पर्धी हैं, बल्कि पूरक भी हैं।*

आर्थिक निर्णय में देरी:-

- *मिश्रित अर्थव्यवस्था में, कुछ निर्णय लेने में हमेशा देरी होती है, खासकर सार्वजनिक क्षेत्र के मामले में।*
- *इस प्रकार की देरी हमेशा अर्थव्यवस्था के सुचारू संचालन के मार्ग में एक बड़ी बाधा बनती है।*

अध्याय – 4

भारत में आर्थिक नियोजन एवं आर्थिक सुधार

भारत में आर्थिक योजना का इतिहास

भारत में आर्थिक नियोजन की अवधारणा यूएसएसआर (रूस) से ली गई थी। आर्थिक नियोजन वह प्रक्रिया है जिसमें वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सीमित प्राकृतिक संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया जाता है।

भारत ने आजादी के बाद निम्नलिखित कारणों से सामाजिक आर्थिक योजना को अपनायाः

- देश में कोई बड़े या महत्वपूर्ण निजी क्षेत्र नहीं था;
- संतुलित क्षेत्रीय विकास और धन के पुनर्वितरण के माध्यम से नियोजन को बेहतर लाभ हुआ;
- ईस्ट इंडियन कंपनी के माध्यम से ब्रिटिश उपनिवेशवाद का लोगों द्वारा गंभीर रूप से विरोध किया गया था;
- जवाहरलाल नेहरू लोकतांत्रिक समाजवाद के लाभों के प्रति आकर्षित थे।
- लेकिन स्वतंत्रता से पहले, स्वतंत्र भारत को नियोजित अर्थव्यवस्था के लिए तैयार करने के प्रयास किए गए थे, हालांकि विभिन्न वर्गों द्वारा पेश किए गए मॉडल काफी भिन्न थे।

आर्थिक विकास का नेहरू- महलनोबिस मॉडल

- स्वतंत्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषता कपास और प्राकृतिक खनिजों जैसी प्राथमिक वस्तुओं के निर्यात पर निर्भरता थी; नगण्य औद्योगिक आधार; अनुत्पादक कृषि आदि। पहली FYP खाद्य सुरक्षा के लिए कृषि पर केंद्रित है। लेकिन अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण और प्रौद्योगिकी और राष्ट्रीय रक्षा में सुधार के लिए औद्योगीकरण की तत्काल आवश्यकता थी।
- इन परिणामों को देने के लिए, नेहरू-महलनोबिस विकास की रणनीति अपनाई गई दूसरी FYP योजना है क्योंकि इसे जवाहरलाल नेहरू की दृष्टि से व्यक्त किया गया था और PCMahalanobis इसके मुख्य वास्तुकार थे। इस रणनीति में अंतर्निहित केंद्रीय विचार योजना दस्तावेज से निम्नलिखित कथन द्वारा अच्छी तरह से व्यक्त किया गया है। "यदि औद्योगीकरण को पर्याप्त तेज़ करना है, तो देश को बुनियादी उद्योगों और उद्योगों को विकसित करने का लक्ष्य रखना चाहिए जो आगे के विकास के लिए आवश्यक मशीनों को बनाने के लिए मशीनें बनाते हैं।"
- विकास का महालनोबिस मॉडल बुनियादी वस्तुओं (पूंजीगत सामान या निवेश के सामान जो कि ऐसी वस्तुएं हैं जिनका उपयोग मशीनों, औजारों, कारखानों आदि जैसे आगे के सामान बनाने के लिए किया जाता है) की प्रबलता पर आधारित है। यह इस आधार पर आधारित है कि यह सर्वांगीण निवेश को आकर्षित करेगा, अनुषंगी (आदानों की आपूर्ति करने वाले उद्योग), टाउनशिप का निर्माण करेगा और इसके परिणामस्वरूप उत्पादन की वृद्धि दर अधिक होगी- ट्रिकल डाउन इफेक्ट। इससे रोजगार सृजन, गरीबी उन्मूलन, निर्यात आदि को बढ़ावा मिलेगा। मजबूत औद्योगिक संपर्क स्थापित करके, जितनी जल्दी हो सके, प्रणाली की उत्पादक क्षमता का विस्तार करने पर जोर दिया गया था।

योजना का इतिहास

पहली योजना (1951-56): पहली योजना में खाद्यान्नों के बड़े पैमाने पर आयात और अर्थव्यवस्था पर मुद्रास्फीति के दबाव को देखते हुए कृषि पर जोर दिया गया था। पहली योजना के दौरान वार्षिक औसत वृद्धि दर 2.1% के लक्ष्य के मुकाबले 3.61% थी। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री केएन राज भारत की पहली पंचवर्षीय योजना के मुख्य वास्तुकारों में से एक थे।

- **दूसरी योजना (1956-61):** पिछली योजना के कृषि लक्ष्यों को प्राप्त करने के साथ, भारी उद्योगों की स्थापना पर प्रमुख जोर दिया गया था। निवेश की दर को 7% से बढ़ाकर 11% करने का लक्ष्य रखा गया था। योजना ने लक्षित विकास दर से आगे हासिल किया। यह योजना नेहरू महलानोबिस मॉडल पर आधारित थी: आत्मनिर्भरता और बुनियादी उद्योग संचालित विकास।
- **तीसरी योजना (1961-66):** इसने उद्योग और कृषि को संतुलित करने का प्रयास किया। तीसरी योजना का उद्देश्य एक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की स्थापना करना था। पहली बार, भारत ने आईएमएफ से उधार लेने का सहारा लिया। 1966 में पहली बार रुपये का अवमूल्यन भी किया गया था। पाकिस्तान के साथ भारत के संघर्ष और बार-बार सूखे ने भी इस योजना की विफलता में योगदान दिया।
- **वार्षिक योजनाएँ:** तीसरी योजना के रूप में बाहरी मोर्चे पर कठिनाइयों का अनुभव हुआ (1962 में चीन के साथ युद्ध और 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध); और घरेलू मोर्चे पर महंगाई, बाढ़, विदेशी मुद्रा संकट- और नेहरू और लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के साथ राजनीतिक अस्थिरता थी, चौथी योजना 1966 से शुरू नहीं हो सकी। 1969 तक तीन वार्षिक योजनाएँ थीं। इस अवधि को योजना अवकाश कहा जाता है अर्थात्

जब पंचवर्षीय योजनाओं को लागू नहीं किया जाता है और केवल वार्षिक योजनाओं का संचालन किया जाता है। वार्षिक योजनाएँ थीं: 1966-67, 1967-68 और 1968-69।

- **चौथी योजना (1969-74):** इस योजना का मुख्य उद्देश्य स्थिरता के साथ विकास करना था। योजना में शिक्षा और रोजगार के प्रावधान के माध्यम से वंचित और कमजोर वर्गों की स्थिति में सुधार पर विशेष जोर दिया गया। बैंकों का राष्ट्रीयकरण, राजकुमारों के लिए प्रिवी पर्स का उन्मूलन (प्रिवी पर्स आजादी के बाद भारत के साथ एकीकरण के लिए उनके समझौतों के हिस्से के रूप में तत्कालीन रियासतों के परिवारों को किया गया भुगतान था); हरित क्रांति के परिणाम, तेल के झटके (तेल निर्यात करने वाले देश फिलिस्तीनियों के लिए घर की मांग के लिए इसे राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करने के लिए कई बार तेल की कीमत बढ़ाते हैं), भारत-पाक युद्ध इस योजना अवधि में महत्वपूर्ण विकास हैं।
- **पांचवीं योजना (1974-79):** योजना का मुख्य उद्देश्य सामाजिक न्याय के लिए विकास था। 1977 में सत्ता में आई जनता पार्टी द्वारा इसे कम कर दिया गया था। जनता 6 वीं FYP 1977 में शुरू की गई थी, लेकिन 1980 में सत्ता में आने वाली सरकार द्वारा आधिकारिक रिकॉर्ड से हटा दी गई थी और आधिकारिक 6th FYP लॉन्च किया गया था। वर्ष 1979-80 इस प्रकार एक अंतराल वर्ष था जब कोई FYP नहीं था और फिर से एक नियोजित अवकाश बन गया।

पंचवर्षीय योजनाओं के लिए वित्तीय संसाधन

- योजना के लिए संसाधन आते हैं-
- केंद्रीय बजट, राज्य के बजट
- सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम
- घरेलू निजी क्षेत्र
- एफडीआई
- **सकल बजटीय सहायता:** जीबीएस केंद्रीय बजट की वह राशि है जो योजना अवधि के दौरान योजना निवेश के लिए जाती है। यह पंचवर्षीय योजना में केंद्रीय हिस्सा है; राज्यों को उनके पंचवर्षीय योजना शेयरों के लिए सहायता; और केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र को वित्त पोषण भी ।

रोलिंग प्लान

- भारत में चीनी हमले के बाद भारत में रक्षा मंत्रालय में 1962 में इसे भारत में अपनाया गया था। प्रोफेसर गुन्नार मायर्डल ('एशियन ड्रामा' के लेखक) ने विकासशील देशों के लिए अपनी पुस्तक - इंडियन इकोनॉमिक प्लानिंग इन इट्स ब्रॉडर सेटिंग में इसकी सिफारिश की। 1977 में जनता सरकार द्वारा इस पर विचार किया गया था। रोलिंग प्लान मॉडल में, भले ही वार्षिक और बहु-वर्षीय लक्ष्य निर्धारित किए गए हों, उनका सख्ती से पालन नहीं किया जाता है क्योंकि जमीनी स्तर की स्थिति अनुकूल नहीं हो सकती है; और इसलिए वे परिस्थितियों के अनुसार रीसेट किए जाने के लिए उत्तरदायी हैं। चल योजना उन परिस्थितियों में आवश्यक हो जाती है जो तरल होती हैं। यह एक सामान्य FYP और एक योजना अवकाश (वार्षिक योजना) के बीच में होता है। रोलिंग योजनाओं का मुख्य लाभ यह है कि वे लचीली होती हैं और देश की अर्थव्यवस्था में बदलती परिस्थितियों के अनुसार लक्ष्य, अनुमान और आवंटन को रीसेट करके निश्चित पंचवर्षीय योजनाओं की कठोरता को दूर करने में सक्षम होती हैं। इस योजना का मुख्य नुकसान यह है कि यदि प्रत्येक वर्ष लक्ष्यों को संशोधित किया जाता है, तो उन्हें प्राप्त करना बहुत कठिन हो जाता है। बार-बार संशोधन से अर्थव्यवस्था में अस्थिरता आती है।
- **छठी योजना (1980-1985):** गरीबी हटाना छठी योजना का प्रमुख उद्देश्य था। जोर देने का एक अन्य क्षेत्र बुनियादी ढांचा था, जिसे उद्योग और कृषि दोनों के विकास के लिए मजबूत किया जाना था। 5.7% की प्राप्त विकास दर लक्ष्य से अधिक थी, गरीबी पर सीधा हमला योजना, एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम (IRDP), ग्रामीण युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण (TRYSEM), महिलाओं और बच्चों के विकास का मुख्य तनाव था। ग्रामीण क्षेत्रों (DWCRA), राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम (NREP) और ग्रामीण भूमिहीन रोजगार गारंटी कार्यक्रम (RLEGP) को छठी योजना में गरीबी से निपटने में आर्थिक विकास की सहायता के लिए शुरू किया गया था। 1981 में भारत ने अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण लिया।
- **सातवीं योजना (1985-90):** इस योजना में खाद्यान्न उत्पादन में तेजी से वृद्धि और रोजगार के अवसरों में वृद्धि पर जोर दिया गया। इस योजना में हासिल की गई 5.81% की विकास दर लक्ष्य से अधिक थी। योजना ने भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण की शुरुआत देखी। आर्थिक उदारीकरण की योजना के दौरान आम सहमति बनाई गई थी। लंबी अवधि की राजकोषीय नीति शुरू की गई थी। पहली बार, 3 साल की निर्यात-आयात नीति की घोषणा की गई थी।
- आर्थिक संकट, बाहरी अनिश्चितताओं और राजनीतिक अस्थिरता के कारण 1990 में आठवीं योजना शुरू नहीं हो सकी। दो वार्षिक योजनाएँ थीं- **योजना अवकाश- 1990-91 और 1991-92।**

मूल्य वृद्धि को नियंत्रित करने के लिये केंद्र सरकार ने वर्ष 2016 में RBI को 31 मार्च, 2021 को समाप्त हुए पाँच साल की अवधि के लिये खुदरा मुद्रास्फीति को 2 प्रतिशत के मार्जिन के साथ 4 प्रतिशत पर रखने का आदेश दिया। मुद्रास्फीति के लक्ष्य को भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 के तहत 1 अप्रैल, 2021 से 31 मार्च, 2026 की अवधि के लिये पिछले 5 वर्षों के समान स्तर पर रखा गया है।

अध्याय – 7

मुद्रा एवं बैंकिंग

मुद्रा (Money)

- मुद्रा वह केंद्र है जिसके चारों ओर किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की चक्रीय गति होती है। आर्थिक प्रणाली में मुद्रा का एक महत्वपूर्ण कार्य 'वस्तुओं तथा सेवाओं के लेनदेन को सरल बनाना है
- इसमें बैंकों की विशेष भूमिका होती है। मिल्टन फ्रीडमैन के अनुसार, "मुद्रा ऐसी कोई भी संपत्ति है जिसमे क्रयशक्ति के अस्थाई निवास के रूप में कार्य करने की क्षमता हो।"

क्रॉथर के अनुसार, 'मुद्रा को ऐसी किसी भी चीज़ के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसे सामान्य रूप से विनिमय को मुद्रा के रूप में स्वीकार किया जाता है और साथ ही साथ जो मूल्य की माप और आरक्षित निधि के रूप में कार्य करती है।

फिएट मनी (Fiat Money) - फिएट मनी को सरकार द्वारा जारी मुद्रा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो सोने या चांदी जैसी किसी भी भौतिक वस्तु द्वारा समर्थित नहीं है, बल्कि सरकार द्वारा जारी की गयी है। धन का कोई आंतरिक मूल्य नहीं होता है। उदाहरण के लिए, मुद्रा नोटों और सिक्कों का मूल्य उनकी उत्पादन लागत पर आधारित नहीं होता है, बल्कि जारी करने वाले प्राधिकरण द्वारा उस मुद्रा या सिक्के के वाहक के लिए निर्धारित अंकित मूल्य या दी गयी गारंटी से व्युत्पन्न किया जाता है। इस प्रकार, सभी मुद्रा नोट और सिक्के फिएट मनी होते हैं।

सिक्का ढलाई मुनाफ़ा (Seigniorage) = मुद्रा नोट / सिक्के का अंकित मूल्य (Face value) (जैसे- ₹2,000) - उस नोट/सिक्के की वास्तविक उत्पादन लागत (जैसे- ₹3.50) ।
मुद्रा नोटों की छपाई के माध्यम से भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा अर्जित सिक्का ढलाई मुनाफे अधिशेष या लाभ का प्रमुख स्रोत बन जाता है। उस सिक्का ढलाई मुनाफे का एक अंश भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा अपने पास रखा जाता है और शेष भारत सरकार को हस्तांतरित कर दिया जाता है।

मुद्रा के प्रकार (Type of Money)

मुद्रा के दो प्रकार हैं जो निम्नलिखित हैं -
(A) वैधानिक मुद्रा (Legal currency)

वह मुद्रा जिसका निर्गमन सरकार या भारतीय रिजर्व बैंक ने किया है। वैधानिक मुद्रा में रिजर्व बैंक धारक को उतनी रकम अदा करने का वचन देता है, जितने मूल्य की करेंसी है।

(B) साख मुद्रा (Credit money)

वह मुद्रा जिसका भुगतान चेक या अन्य माध्यमों से किया जाता है। यह एक ऐच्छिक मुद्रा है, जिसे स्वीकार करना व्यक्ति की बाध्यता नहीं है। सामान्यतः साख मुद्रा के 5 रूप प्रचलित हैं-

- प्रतिज्ञा पत्र (Bond)
- चेक (Cheque)
- हुंडी (Hundi)
- विनिमय-पत्र (Exchange Deed)
- बैंक-ड्राफ्ट (Bank Draft)

सांकेतिक मुद्रा (Token money)

यह वह मुद्रा होती है जिसका आंतरिक भारतीय मूल्य उसके अंकित मूल्य से कम होता है। यह सस्ती धातु से बनी होती है। उदाहरण-भारतीय सिक्के।

प्रमाणिक मुद्रा (Standard money)

यदि सिक्के का वास्तविक एवं अंकित मूल्य बराबर हो तो उसे 'प्रमाणिक मुद्रा' कहते हैं सोने और चांदी के सिक्के प्रमाणिक मुद्रा ही होते हैं।

प्लास्टिक मनी (Plastic money)

विभिन्न बैंकों, वित्तीय संस्थाओं तथा अन्य कंपनियों द्वारा जारी किए गए डेबिट एवं क्रेडिट कार्ड आदि को 'प्लास्टिक मनी' कहा जाता है। डेबिट कार्ड के द्वारा बैंक खाते में जितनी धनराशि जमा हो उतने तक ही खरीदारी या निकासी की सुविधा होती है, जबकि क्रेडिट कार्ड से बैंक खाते में धनराशि न होने पर भी कुछ निकासी खरीदारी की जा सकती है।

नजदीकी मुद्रा (Near money)

वह संपत्ति, जो ऐसे रूप में हो जिसे जल्दी तथा आसानी से मुद्रा में परिवर्तित किया जा सकता है, नजदीकी मुद्रा या समीपस्थ मुद्रा कहलाती है जैसे- सोना और चांदी।

गर्म मुद्रा (Hot money)

इस मुद्रा को हॉट मनी या गर्म मुद्रा कहां जाता है जिसमें वित्तीय बाजार में शीघ्र पलायन कर जाने की प्रवृत्ति होती है अर्थात जिस स्थान पर लाभ मिलने की संभावनाएं अधिक होती है, उसी स्थान पर यह स्थानांतरित हो जाती है, जैसे- शेयर बाजार में लगी विदेशी मुद्राएं। गर्म मुद्रा के अंतर्गत निवेशक अल्पकालीन लाभ को ध्यान में रखते हुए वित्तीय परिसंपत्तियों एवं प्रतिभूतियों में निवेश करते हैं।

दुर्लभ मुद्रा एवं सुलभ मुद्रा (Hard currency and soft currency)

विश्व बाजार में जिस देश की मुद्रा की आपूर्ति की अपेक्षा मांग अधिक होती है उसे दुर्लभ मुद्रा (Hard currency) कहते हैं, जैसे- अमेरिकी डॉलर, ब्रिटिश पौंड, यूरोपीय संघ का यूरो इत्यादि।

इसके विपरीत जिस देश की मुद्रा की आपूर्ति के अपेक्षा मांग कम होती है, वह अंतरराष्ट्रीय बाजार में बड़ी आसानी से उपलब्ध हो जाती है, उसे सुलभ मुद्रा (Soft currency) कहते हैं।

कॉशन मनी (Caution money)

किसी भी संविदा और दायित्व को पूर्ण करने के लिए जमानत के तौर पर मांगी जाने वाली राशि को 'कॉशन मनी' कहते हैं।

धातु मुद्रा (Metallic money)

धातु से बनी मुद्रा को धातु मुद्रा कहते हैं। इस मुद्रा की विशेषता यह है कि इसमें बाह्य मूल्य (Face Value) के साथ-साथ आंतरिक मूल्य (Intrinsic Value) भी सन्निहित होता है। बाह्य मूल्य से आशय मुद्रा पर अंकित मूल्य जबकि आंतरिक मूल्य से आशय धातु के निहित मूल्य से होता है। पहले सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं का चलन मुद्रा के रूप में था, जबकि वर्तमान में गिल्ट, तांबा आदि धातुओं का प्रयोग धातु मुद्रा में किया जाता है। धातु मुद्रा को सिक्का भी कहते हैं।

कागजी मुद्रा (Paper money)

कागजी मुद्रा एक विशेष किस्म के कागज पर लिखित प्रतिज्ञा पत्र है [मैं धारक को..... (जितने मूल्य का नोट है) अदा करने का वचन देता हूं] है जिसके माध्यम से निर्गमन अधिकारी (केंद्रीय बैंक या सरकार) धारक को उस पर अंकित राशि देने का वचन देता है। इसका निर्गमन एक निश्चित विधान के अंतर्गत किया जाता है। इसमें केवल बाह्य मूल्य होता है, आंतरिक मूल्य बहुत कम होता है।

भारत की राष्ट्रीय मुद्रा

- भारतीय रुपया (प्रतीक चिह्न ₹ कोड : INR) भारत की राष्ट्रीय मुद्रा है।
- इसका बाजार नियामक और जारीकर्ता भारतीय रिजर्व बैंक है।
- भारतीय मुद्रा के लिए एक अधिकारिक प्रतीक चिह्न जुलाई , 2010 में चुना गया था जिसे IIT गुवाहाटी के असिस्टेंट प्रोफेसर डी. उदय कुमार ने डिजाइन किया था।

- अमेरिकी डॉलर , ब्रिटिश पाउंड , जापानी येन और यूरोपीय संघ के यूरो के बाद रुपया पाँचवी ऐसी मुद्रा है , जिसे उसके प्रतीक चिह्न से पहचाना जाता है ।
- रुपया शब्द का उद्गम संस्कृत के शब्द रुप् या रुप्याह् में निहित है जिसका अर्थ चाँदी होता है और रूप्यकम् का अर्थ चाँदी का सिक्का है ।
- रुपया शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम शेरशाह सूरी ने भारत में अपने शासनकाल के दौरान किया था।
- शेरशाह सूरी ने अपने शासनकाल में जो रुपया चलाया वह एक चाँदी का सिक्का था जिसका भार 178 ग्रेन (11.7387 ग्राम) के लगभग था।
- शेरशाह के शासनकाल में भी प्रचलन में रहा ।
- पहले 1 रुपया (1166 ग्राम) 16 आने (या 64 पैसे या 192 पाई) में बाँटा जाता था । यानी 1 आना 4 पैसों या 12 पाई में विभाजित था । 1957 में रुपये का दशमलवीकरण हुआ । इस प्रकार भारतीय रुपया 100 पैसे में विभाजित हो गया । भारत में पैसे को पहले नया पैसा नाम से जाना जाता था ।

नोट

- वर्ष 2011 में नोटों पर रुपये के नए चिह्न का प्रयोग प्रारम्भ हुआ ।
- भारतीय नोट पर उसकी कीमत 15 भाषाओं में लिखी जाती है ।
- रुपया भारत के अलावा इंडोनेशिया , मॉरीशस , नेपाल , पाकिस्तान और श्रीलंका की भी अधिकारिक मुद्रा है । रुपये को फिएट करेंसी कहते है ।
- ऐसा नहीं कि भारतीय रिजर्व बैंक जितनी मर्जी चाहे उतनी कीमत के नोट छा सकता है , बल्कि वह सिर्फ 10,000 रुपये तक के नोट छाप सकता है । अगर इससे ज्यादा कीमत के नोट छापने हैं , तो उसको रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया एक्ट , 1934 में बदलाव करना होगा । इसी प्रकार रिजर्व बैंक अधिकतम 1,000 रुपए मूल्यवर्ग तक के सिक्के जारी कर सकता है

नोटों का विमुद्रीकरण

- जब किसी देश की सरकार किसी पुरानी मुद्रा को कानूनी तौर पर बंद कर देती है , तो इसे विमुद्रीकरण (Demonetization) कहते है ।
- विमुद्रीकरण के बाद उस मुद्रा की कुछ कीमत नहीं कर जाती ।
- उससे किसी तरह की खरीद - फरोख्त नहीं की जा सकती ।

  सरकार द्वारा बंद किए गए नोटों को बैंकों में बदलकर उनकी जगह नए नोट लेने के लिए समय सीमा तय कर देती है । उस दौरान जिसने अपने नोट बैंकों में जाकर नहीं बदले या जमा नहीं किए उनके नोट कागज का टुकड़ा बनकर रह जाते हैं ।
- सरकार ऐसा कई कारणों से कर सकती है -

  सरकार पुराने नोटों की जगह नए नोट लाने पर पुराने नोटों का विमुद्रीकरणका कर देती है। मुद्रा की जमाखोरी (कालाधन) को खत्म करने के लिए भी बड़े राशि के नोटों का विमुद्रीकरण किया जाता है । आतंकवाद अपराध और तस्करी जैसे आपराधिक कार्यों में भी बड़े पैमाने पर नगद लेन - देन होता है । इन कामों में लिप्त लोग कई बार नगद राशि अपने पास जमा रखते हैं । बाजार में कई बार नकली नोट भी प्रचलन में आ जाते हैं । सरकार नकली नोटों से छुटकारा पाने के लिए पुराने नोट बदल देती है । जालसाजी से बचने के लिए नई तकनीकी से तैयार किए गए ज्यादा सुरक्षित नोट लाने पर भी सरकार पुराने नोटों का विमुद्रीकरण कर देती है । टैक्स चोरी के लिए किए जाने वाले नगद लेन - देन को हतोत्साहित करने के लिए भी सरकारें कई बार विमुद्रीकरण का रास्ता अपनाती हैं

  NOTE- सर्वप्रथम मुद्रा का विमुद्रीकरण जनवरी, 1946 में किया गया जब 1,000 और 10,000 रुपये के नोटों को वापस ले लिया गया । 1,000 , 5,000 और 10,000 रुपये के नए नोट 1954 में पुन शुरू किए गए ।

  वर्ष 1970 के दशक में प्रत्यक्ष कर की जाँच से जुड़ी वानचू समिति ने कालाधान बाहर लाने और उसे खत्म करने के लिए विमुद्रीकरण का सुझाव दिया था । लेकिन इस सुझाव के सार्वजनिक हो जाने की वजह से कालाधन रखने वालों ने तत्काल अपने पैसे इधर - उधर निकाल दिए ।

  वर्ष 1977 में इमरजेंसी हटने के बाद चुनाव हुए और केन्द्र में मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार बनी । 16 जनवरी, 1978 को मोरारजी सरकार ने एक कानून बनाकर 1000, 5000 और 10,000 के नोट बंद कर दिए ।

  इसके बाद 8 नवम्बर , 2016 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पुराने 500 और 1000 की मुद्रा बंद कर दिए और नए 500 रुपये के नोट पेश किये ।

रुपए का अवमूल्यन

- अर्थशास्त्र में किसी मुद्रा के अवमूल्यन का मतलब होता है उसकी कीमत का किसी दूसरी मुद्रा के मुकाबले कम कर देना । इसे ऐसे समझे कि अगर रुपए का अवमूल्यन होता है तो इसका मतलब होगा कि अब एक डॉलर खरीदने के लिए आपको ज्यादा रुपये खर्च करने पड़ेगे यानी रुपए की कीमत कम हो जायेगी ।
- किसी देश द्वारा मुद्रा की विनिमय दर अन्य देशों की मुद्राओं की तुलना में जानबूझ कर इसलिए कम की

उत्पादन करने के लिए सिक्योरिटी पेपर मिल होशंगाबाद में 1967-68 में चालू की गई थी।

सरकार के बैंकर का कार्य करना

- सरकारी बैंकर के रूप में यह निम्नलिखित कार्य सम्पन्न करता है-
  (i) भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की ओर से धन प्राप्त करना और इनके आदेशानुसार इनका भुगतान करना।
  (ii) भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की ओर से जनता से ऋण प्राप्त करना।
  (iii) सरकारी कोषों का स्थानान्तरण करना।
  (iv) भारत सरकार एवं राज्य सरकारों के लिए विदेशी विनिमय का प्रबन्ध करना।
  (v) भारत सरकार एवं राज्य सरकारों को आर्थिक सलाह देना।

रिजर्व बैंक बैंकों का बैंक

- बैंकों के बैंक के रूप में यह निम्नलिखित कार्य करता है
  (i) रिजर्व बैंक व्यापरिक बैंकों का अंतिम ऋणदाता है।
  (ii) रिजर्व बैंक बैंकों की साख नीति का नियंत्रण रखता है।
  (iii) वर्ष 1949 के बैंकिंग नियमन अधिनियम के अंतर्गत रिजर्व बैंक को व्यापक अधिकार प्राप्त है ; जैसे - अनुसूचित बैंक का निरीक्षण करना, नए बैंकों की स्थापना के लिए अनुज्ञा - पत्र प्रदान करना, आदि।

विदेशी विनिमय कोष का संरक्षण करना

- केन्द्रीय बैंक देश के विदेशी विनिमय कोष के संरक्षक के रूप में भी कार्य करता है। केन्द्रीय बैंक विदेशी मुद्राओं के कोष संचित रखता है जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार के विकास तथा विनिमय दर की स्थिरता को बनाए रखा जा सके।

कृषि साख की व्यवस्था करना

- कृषि साख की व्यवस्था करने के लिए रिजर्व बैंक ने एक कृषि साख विभाग की स्थापना की है। इस विभाग का मुख्य कार्य कृषि साख से सम्बन्धित समस्याओं के बारे में अनुसंधान करना है।

समाशोधन - गृह का कार्य करना

- रिजर्व बैंक देश का केन्द्रीय बैंक है। यह बैंकों को समाशोधन गृह (Clearing House) की सुविधा प्रदान करता है। यह कार्य करके रिजर्व बैंक सदस्य बैंकों में रुपए के स्थानान्तरण को सुविधाजनक बनाता है

साख का नियंत्रण करना

- साख तथा मुद्रा पर नियंत्रण करने के लिए रिजर्व बैंक देश में मुद्रा तथा साख की माँग व पूर्ति के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। देश में मौद्रिक स्थायित्व लाने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कार्य है।

औद्योगिक वित्त की व्यवस्था में सहायता करना

- रिजर्व बैंक ने ' औद्योगिक वित्त निगम ' तथा ' राज्य वित्त निगमों ' के बड़ी मात्रा में अंश खरीद रखे हैं। आवश्यकता पड़ने पर वह दीर्घकालीन व मध्यकालीन ऋण भी प्रदान करता है।

आर्थिक व्यवस्था से सम्बन्धित समक एकत्रित करना

- रिजर्व बैंक मुद्रा , साख , बैंकिंग , वित्त , कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन आदि से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करता है और उन्हें प्रकाशित करता है। ये आँकड़े देश की विभिन्न आर्थिक समस्याओं को समझने में सहायता देते हैं।

भारत की वर्तमान करेन्सी व्यवस्था

- भारतीय करेन्सी व्यवस्था की इकाई रुपया है जिसमें कागजी करेन्सी और सिक्के दोनों प्रचलित हैं। सिक्के एवं एक रुपये का नोट (जिस पर वित्त सचिव , भारत सरकार के हस्ताक्षर होते हैं) भारत सरकार निर्गत करती है , जबकि 2 ,5 ,10,20,50, 100, 500 तथा 2,000 रुपये के करेन्सी नोट भारतीय रिजर्व बैंक निर्गत करता है।

साख नियंत्रण (Control of Credit)

- रिजर्व बैंक साख के नियंत्रण एवं नियमन हेतु दो प्रकार के का प्रयोग करता है
  (A) परिमाणात्मक या मात्रात्मक साख नियंत्रण
  (B) गुणात्मक साख नियंत्रण

(A) परिमाणात्मक विधियाँ

- इनके द्वारा एक अर्थव्यवस्था की कुल मुद्रा पूर्ति / साख को प्रभावित किया जा सकता है। इनके द्वारा साख के प्रवाह को न तो अर्थव्यवस्था के किसी खास क्षेत्र की ओर निर्देशित किया जाता है और न ही सीमित किया जाता है। ये विधियाँ निम्न हैं-

चल निधि समायोजन सुविधा या तरलता समायोजन सुविधा

(LAF- Liquidity Adjustment Facility)

तरलता समायोजन सुविधा (LAF) एक मौद्रिक नीति उपकरण है, जो बैंकों को पुनर्खरीद समझौतों (repos) के माध्यम से RBI से धन उधार लेने या रिवर्स रेपो समझौतों के माध्यम से RBI को ऋण देने की अनुमति देता है। बैंकिंग क्षेत्र के सुधारों पर नरसिम्हन समिति की रिपोर्ट (1998) के परिणामस्वरूप, RBI ने LAF की शुरुआत की। इसमें निम्नलिखित तीन उप-उपकरण समाविष्ट हैं-

a. रेपो रेट (पुनर्खरीद विकल्प) [Repo Rate (Re-purchase Option Rate)] :

यह वह ब्याज दर है, जिस पर भारतीय रिज़र्व बैंक SCBs को अनुमोदित प्रतिभूतियों के विरुद्ध अल्पकालिक ऋण प्रदान करता है। 28 फ़रवरी 2023 को रेपो रेट 6.5 प्रतिशत रही।

b. रिवर्स रेपो रेट (RRR) : यह वह ब्याज दर है, जिस पर **भारतीय रिज़र्व बैंक** देश के वाणिज्यिक बैंकों से निधियों को उधार लेता है। दूसरे शब्दों में, यह वह दर है, जिस पर भारत में स्थित वाणिज्यिक बैंक अपनी अधिशेष मुद्रा को थोड़े समय के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक के पास जमा करते हैं। 28 फ़रवरी 2023 तक, रिवर्स रेपो दर 3.35% थी।

c. सीमांत स्थायी सुविधा [Marginal Standing Facility (MSF)]: यह सुविधा भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा 2011 में प्रारम्भ की गयी थी ।

बैंक दर (Bank Rate)	• भारतीय रिज़र्व बैंक जिस ब्याज दर पर व्यावसायिक बैंकों को दीर्घकालीन ऋण उपलब्ध कराता है, बैंक दर कहलाता है । • **प्रभाव-** बैंक दर में परिवर्तन का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से व्यावसायिक बैंकों द्वारा आवंटित ऋणों की ब्याज दर पर पड़ता है । इसके अन्तर्गत रिज़र्व बैंक के पास अनुसूचित बैंकों की कुल वैधानिक जमाराशि के एक निश्चित प्रतिशत के बराबर उनके मूल कोटे निर्धारित कर दिया गया । • निर्धारित कोटे की सीमा तक रिज़र्व बैंक से बैंक दर पर ऋण लिया जा सकता है । इससे अधिक ऋण देने पर बैंक दर के अतिरिक्त ब्याज की दंड दर (Penal rate) देनी पड़ती है । • बैंक दर में वृद्धि या कमी व्यावसायिक बैंक द्वारा आवंटित ऋणों पर ब्याद दर कम या ज्यादा करने के लिए होता है । • **NOTE :** बेस रेट वह दर है जिसके नीचे अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक किसी भी तरह का ऋण नहीं दे सकते हैं । यह वर्ष 2010 में पूर्व प्रचलित प्राइम लैंडिंग रेट नोट (PLR) के स्थान पर अपनाया गया है
नकद आरक्षण अनुपात (Cash Reserve Ratio)	• प्रत्येक व्यापारिक बैंक अपनी कुछ जमाओं का एक निर्धारित प्रतिशत रिज़र्व बैंक के पास सदैव नकद रूप में रखता है जिसे नकद आरक्षण अनुपात (CRR) कहते हैं । • रिज़र्व बैंक इस नकद पर कोई ब्याज बैंक को नहीं देता है । जब रिज़र्व बैंक साख मुद्रा वृद्धि करना चाहता है , तो वह इस अनुपात में कमी कर देता है । और यदि वह साख मुद्रा में कमी करना चाहता है , तो वह इस अनुपात में वृद्धि कर देता है । • SCBS द्वारा RBI के पास रखे गए CRR बैलेंस पर RBI कोई ब्याज नहीं देता है। • भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम के प्रविधानों में CRR तय करने के लिए कोई रेंज (सीलिंग रेट या फ्लोर रेट) निर्धारित नहीं है। • मुद्रा आपूर्ति को कम करने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक CRR बढ़ाता है और इसके विपरीत मुद्रा आपूर्ति बढ़ाने के लिए CRR को कम करता है। • प्रारम्भ में CRR काफी अधिक था, लेकिन कई वर्षों से इसे धीरे-धीरे नीचे लाया गया है। • 28 फ़रवरी 2023 को CRR की दर शुद्ध DTL का 4.5 प्रतिशत थी।
वैधानिक तरलता अनुपात (Statutory Liquidity Ratio)	• प्रत्येक बैंक को कुल जमाराशि के एक निश्चित प्रतिशत को अपने पास नकद रूप में या अन्य तरल परिसम्पत्तियों के रूप में (सोना अनुमोदित प्रतिभूतियाँ- सरकारी प्रतिभूतियाँ) रखना पड़ता है जिसे वैधानिक तरलता (SLR) कहा जाता है । • यदि रिज़र्व बैंक को साख मुद्रा का प्रसार करना होता है , तो इस अनुपात को कम कर दिया जाता है , ताकि बैंकों के पास तरल कोषों में वृद्धि हो सके । • यदि साख का संकुचन करना होता है , तो इस अनुपात को बढ़ा दिया जाता है , ताकि बैंकों के पास तरल कोष कम उपलब्ध हो । **नोट -** भारतीय रिज़र्व बैंक के LAF के अंतर्गत SCBS द्वारा अधिग्रहीत प्रतिभूतियों को SLR प्रतिभूतियों के रूप में नहीं माना जायेगा।

	• SLR को SCBS द्वारा सरकारी प्रतिभूतियों की ख़रीद के माध्यम से सरकार को ऋण प्रदान करने के लिए उपयोग किये जानेवाले तंत्र के रूप में देखा जा सकता है। • भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित SLR की सीमा 0 से 40 प्रतिशत तक है। • मुद्रास्फीति कम करने के लिए RBI के द्वारा SLR में बढ़ोतरी की जाती है और आर्थिक विकास में वृद्धि करने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा SLR को घटाया जाता है। **नोट** – आम तौर पर, मुद्रास्फीति और आर्थिक विकास मुद्रास्फीति के एक निश्चित स्तर तक साथ-साथ चलते हैं, यानी, वे प्रारंभिक चरण में एक दूसरे के सीधे आनुपातिक होते हैं, लेकिन लंबे समय में नहीं।) • 28 फ़रवरी 2023 को SLR की दर NDTL का 18 प्रतिशत थी।
रेपो दर (Repo Rate)	• रेपो दर वह दर है जिस पर रिजर्व बैंक बैंकों को अल्पकालीन ऋण देकर अर्थव्यवस्था में तरलता की अतिरिक्त मात्रा जारी करता है । • इसका प्रभाव व्यावसायिक बैंकों द्वारा आवंटित ऋणों पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है । • इसका प्रयोग तात्कालिक मुद्रा के प्रसार में वृद्धि या कमी के लिए किया जाता है । • मंदी के दौरान रेपो दर में कटौती की जाती है ताकि मुद्रा के प्रसार में वृद्धि हो । ज्यों - ज्यों मंदी का दौर खत्म होता है , रेपो दर से वृद्धि की जाती है ताकि तात्कालिक मुद्रा का प्रसार कम हो ।
रिवर्स रेपो दर (Reverse Repo Rate)	• यह रेपो दर से उल्टी होती है । बैंकों के पास दिनभर के कामकाज के बाद बहुत बार एक बड़ी रकम शेष बच जाती है । बैंक वह रकम अपने पास रखने के बजाए रिजर्व बैंक में रख सकते हैं , जिस पर उन्हें रिजर्व बैंक से ब्याज भी मिलता है । जिस दर पर यह ब्याज मिलता उसे रिवर्स रेपो दर कहते हैं ।
मार्जिनल स्टैण्डिंग फैसिलिटी (MSF)	• इसके अंतर्गत व्यापारिक बैंक । दिन (24 घण्टे) हेतु ऋण प्राप्त कर सकते हैं । • MSF के माध्यम से बैंक अपनी NDTL के 2.5% तक ऋण प्राप्त कर सकते हैं । • इसमें SLR में रखी प्रतिभूतियों को भी गिरवी रख सकते हैं । • यह सुविधा मात्र वाणिज्यक बैंकों को उपलब्ध है । MSF की ब्याज दर Repo rate से 0.25 % अधिक होती

(I) **दीर्घ कालिक रेपो संचालन (Long Term Repo Operations)** – यह हाल ही में प्रचलित हुआ उपकरण है, यह एक हालिया उपकरण है जिसके माध्यम से भारतीय रिज़र्व बैंक SCBs को प्रचलित रेपो दर पर । से 3 वर्ष का ऋण प्रदान करता है, और संपार्श्विक के रूप में समान या अधिक अवधि वाली सरकारी प्रतिभूतियों को स्वीकार करता है। भारतीय रिज़र्व बैंक की मौजूदा चलनिधि समायोजन सुविधा (LAF) । से लेकर 28 दिनों तक के लिए उनकी तात्कालिक आवश्यकताओं के लिए बैंकों को मुद्रा प्रदान करती है, जबकि दीर्घकालिक रेपो संचालन (LTROS) उन्हें उनकी । से 3 वर्ष की आवश्यकताओं के लिए चलनिधि की आपूर्ति करती है।

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा दीर्घकालिक रेपो संचालन (LTRO) प्रारम्भ करने का उद्देश्य SCBs को उचित लागत अर्थात् रेपो रेट पर टिकाऊ चल निधि (1 से 3 वर्ष के लिए) की उपलब्धता के बारे में आश्वस्त करना है। दीर्घकालिक रेपो संचालन (LTRO), SCBs द्वारा प्रभारित की जानेवाली अल्पकालिक बाज़ार ब्याज दरों को कम करने में सहायक होंगे और कॉर्पोरेट बॉण्ड में निवेश को भी बढ़ायेंगे।

दीर्घकालिक रेपो संचालन (LTRO) का उपयोग करके, भारतीय रिज़र्व बैंक का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि **धन की आपूर्ति में वृद्धि** के प्रभाव को उचित रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था के बेहतर आर्थिक विकास के रूप में साकार किया जाये।

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा उपयोग किया जाने वाला ऐसा ही एक और उपकरण है, जिसे **'लक्षित दीर्घकालिक रेपो संचालन' [Targeted Long Term Repo Operations (TLTRO)]** कहा जाता है। 'लक्षित दीर्घकालिक रेपो संचालन' (TLTRO), 'दीर्घकालिक रेपो संचालन' से इस अर्थ में भिन्न होता है कि यहाँ प्रदान किये गये ऋण 'लक्षित' होते हैं अर्थात् SCBs को 'लक्षित दीर्घकालिक रेपो संचालन' (TLTRO) योजना के तहत प्राप्त धनराशि को निर्धारित समय सीमा के भीतर निर्दिष्ट प्रतिभूतियों

निजी क्षेत्र के नए भारतीय बैंकों की स्थापना के लिए RBI द्वारा जारी दिशा-निर्देश

यह दिशा-निर्देश 2016 में जारी किए जगए जिसे RBI के ये 1 August 2016 को प्रकाशित किया । इसके अंतर्गत एक योग्य निवेशक नए बैंक की स्थापना के उद्देश्य से कभी भी आवेदन कर सकता है लाइसेंस जारी करने के लिए दिशा-निर्देश निम्नलिखित हैं

1. एक व्यक्ति जोकि बैंकिंक एवम् वित्तीय क्षेत्र से कम से कम 10 वर्षों से पुरा एक औद्योगिक इकाई अथवा निवेशक जिसका भारत में कम-से-कम 10 वर्ष पुराना स्वच्छ इतिहास हो एवम् वर्तमान में कार्यरत कोई भी N|BFC नए बैंक की स्थापना के लिए आवेदन कर सकते हैं|
2. बड़े औद्योगिक समूह आवेदन के पात्र नहीं होंगे परन्तु ये किसी भी बैंक में 10% तक की हिस्सेदारी खरीद सकते हैं ।
3. बैंक की स्थापना के लिए न्यूनतम 500 करोड़ के पूंजी निवेश की होगी ।
4. प्रथम 5 वर्षों में संस्थापक अपनी हिस्सेदारी 40% से कम नहीं कर सकता इन 5 वर्षों में विदेशी निवेश 49% से ज्यादा नहीं हो सकता किसी भी एक निवेशक के पास 10% से ज्यादा हिस्सेदारी नहीं जा सकती |
5. 15 वर्षों के अंत तक संस्थापक को अपनी हिस्सेदारी अनिवार्य रूप से घटाकर 15% तक लानी होगी विदेशी निवेश 74% से ज्यादा का नहीं हो सकता एवम् किमी भी एक विदेशी निवेशक के पास 10% से ज्यादा हिस्सेदारी नहीं जा सकती |
6. जारी किया गया लाइसेंस 18 महीनों तक मान्य होगा | यदि इस दौरान बैंक स्थापित न हो पाए तब लाइसेंस स्वतः रद्द हो जाएगा |
7. 6 वर्षों के भीतर बैंक को शेयर बाजार में सूचीबद्ध कराना होगा |
8. इन बैंकों की 1/4 शाखाएँ अनिवार्य रूप से वैसे ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित होने चाहिए जिनकी जनसंख्या 2011 की जनगणना के आधार पर कम से कम 9999 हो । (2004 में 45 Bank एवम् Kotak Mahindra Bank को लाइसेंस दिया गया था । पुनः 2004 में IDFC बैंक एवम् बंधन बैंक को लाइसेंस दिया गया परन्तु इन इन नए दिशा-निर्देशों के आधार पर अब तक किसी भी बैंक को लाइसेंस नहीं दिया गया है ।)

भारत में भुगतान प्रणाली

- भुगतान प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है जिसका उपयोग मौद्रिक मूल्य के हस्तांतरण के माध्यम से वित्तीय लेन-देन को निपटाने के लिये किया जाता है तथा इसमें विभिन्न तंत्र शामिल होते हैं जो एक पार्टी (भुगतानकर्त्ता) से दूसरे (प्रदाता) को धन के हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करते हैं।
- एक भुगतान प्रणाली में प्रतिभागियों (संस्थाओं) व उपयोगकर्ताओं (ग्राहकों/पक्षकार), नियमों और विनियमों को शामिल किया जाता है जो इसके संचालन, मानकों एवं प्रौद्योगिकियों को निर्देशित करते हैं जिन पर सिस्टम संचालित होता है।
- भुगतान और निपटान प्रणाली के विनियमन एवं पर्यवेक्षण बोर्ड (BPSS), RBI के केंद्रीय बोर्ड की एक उप-समिति, भारत में भुगतान प्रणाली पर नीति निर्माण करने वाली सर्वोच्च संस्था है।
- भारत में भुगतान प्रणाली का नियमन

- **भुगतान एवं निपटान प्रणाली अधिनियम-2007** के अनुसार किया जा रहा हैं
  भारत में इस समय बहुत - सी इलेक्ट्रॉनिक भुगतान प्रणालियाँ चलन में हैं , जिनमें मुख्य हैं
  1. राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक निधि अंतरण The spreare po (National Electronic Funds Transfer- NEFT)
  2. तत्काल सकल निपटान (Real Time Gross Settlement- RTGS)
  3. तत्काल भुगतान सेवा (Immediate Payment Service - IMPS)

1. नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फंड्स ट्रांसफर (NEFT) :

- यह भारत के सबसे प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक धन हस्तांतरण प्रणालियों में से एक है ।
- इसे नवम्बर, 2005 में शुरू किया गया था ।
- NEFT एक व्यक्ति के खाते से दूसरे व्यक्ति के खाते में पैसे भेजने की सुविधा है ।
- इसमें पैसा तुरन्त ही लाभार्थी के खाते में जमा हस्तांतरित नहीं किया जा सकता है बल्कि इसको भेजने के लिए प्रति घंटा के हिसाब से टाइम स्लॉट बँटे होते हैं जिनमें ही इस माध्यम से रुपए भेजे जा सकते हैं इसे इलेक्ट्रॉनिक संदेशों के माध्यम से किया जाता है ।

2. तत्काल सकल निपटान (RTGS):

- RTGS के माध्यम से रुपए का हस्तांतरण बिना किसी देरी के किया जाता है ।
- इसमें जैसे ही किसी ने ऑनलाइन पैसे भेजने के लिए ok का बटन दबाया लाभार्थी के खाते में रुपए तुरन्त पहुँच जाते हैं ।
- भारतीय RTGS प्रणाली लगभग 16 दिन में देश की जीडीपी के बराबर का लेन - देन कर देती है।

अध्याय – 2

इनपुट और आउटपुट युक्तियां

कम्प्यूटर और मनुष्य के मध्य सम्पर्क (Communication) स्थापित करने के लिए इनपुट - आउटपुट युक्तियों का प्रयोग किया जाता है। इनपुट युक्तियों का प्रयोग कम्प्यूटर को डेटा और निर्देश प्रदान करने के लिए किया जाता है।

इनपुट डेटा को प्रोसेस करने के बाद, कम्प्यूटर आउटपुट युक्तियों के द्वारा प्रयोगकर्ता को आउटपुट प्रदान करता है। कम्प्यूटर मशीन से जुडी हुई सभी इनपुट-आउटपुट यूक्तियों को पेरीफेरल युक्तियाँ भी कहते हैं।

इनपुट युक्तियाँ (Input Devices)

वे युक्तियाँ, जिनका प्रयोग उपयोगकर्ता के द्वारा कम्प्यूटर को डेटा और निर्देश प्रदान करने के लिए किया जाता है, इनपुट युक्तियाँ कहलाती हैं। इनपुट युक्तियाँ उपयोगकर्ता से इनपुट लेने के बाद इसे मशीनी भाषा (Machine Language) में परिवर्तित करती हैं और इस परिवर्तित मशीनी भाषा को सीपीयू के पास भेज देती हैं।

कुछ प्रमुख इनपुट युक्तियाँ निम्न हैं

1. कीबोर्ड (Keyboard)

कीबोर्ड एक प्रकार की मुख्य इनपुट डिवाइस है। कीबोर्ड का प्रयोग कम्प्यूटर को अक्षर और अंकीय रूप में डेटा और सूचना देने के लिए करते हैं। कीबोर्ड एक सामान्य टाइपराइटर की तरह दिखता है , इसमें टाइपराइटर की अपेक्षा कुछ ज्यादा कुंजियाँ (Keys) होती हैं। जब कोई कुंजी कोबोर्ड पर दबाई जाती है तो कीबोर्ड, कीबोर्ड कण्ट्रोलर और की बोर्ड बफर से सम्पर्क करता है। कीबोर्ड कण्ट्रोलर, दबाई गई कुंजी के कोड को कीबोर्ड बफर में स्टोर करता है और बफर में स्टोर कोड सी पी यू के पास भेजा जाता है। सी पी यू इस कोड को प्रोसेस करने के बाद इसे आउटपुट डिवाइस पर प्रदर्शित करता है। कुछ विभिन्न प्रकार के कीबोर्ड जैसे कि QWERTY, DVORAK और AZERTY मुख्य रूप से प्रयोग किए जाते हैं।

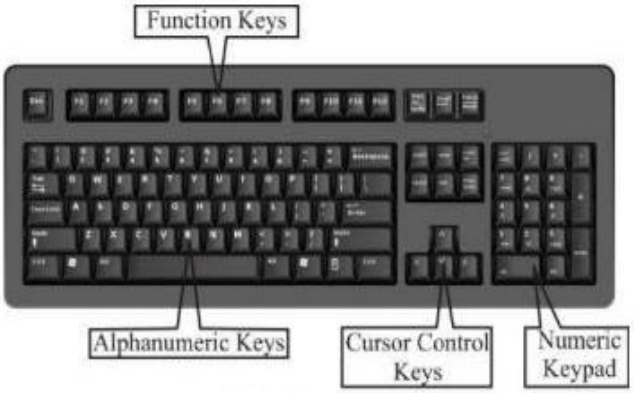

कीबोर्ड का लेआउट

कीबोर्ड में कुंजियों के प्रकार ((Types of Keys on Keyboard)

कीबोर्ड में निम्न प्रकार की कुंजियां होती हैं

(i) अक्षरांकीय कुंजियाँ (Alphanumeric Keys) इसके अंतर्गत अक्षर कुंजियाँ (A, B....., a, b, c,....., z) और अंकीय कुंजियाँ (0, 1, 2,9) आती हैं।

| (ii) अंकीय कुँजियाँ (Numeric Keys) ये कुंजियाँ कीबोर्ड पर दाएँ तरफ होती हैं। ये कुंजियाँ अंको (0, 1, 2, 9) और गणितीय ऑपरेटरों (Mathematical operators) से मिलकर बनी होती है।

(iii) फंक्शन कुंजियाँ (Function Keys) इन्हें प्रोग्रामेबल कुंजियाँ भी कहते हैं। इनके द्वारा कंप्यूटर से कुछ विशिष्ट कार्य करवाने के लिए निर्देश दिया जाता है। ये कुंजियाँ अक्षरांकीय कुंजियों के ऊपर F1, F2, F12 से प्रदर्शित की जाती हैं।

(iv) कर्सर कण्ट्रोल कुंजियाँ (Cursor Control Keys) इसके अन्तर्गत चार तीर के निशान वाली कुंजियाँ आती हैं जो चार दिशाओं (दाएँ, बाएँ, ऊपर, नीचे) को दर्शाती हैं। ये कुंजियाँ अक्षरांकीय कुंजियों और अंकीय कुंजियों के मध्य उल्टे T आकार में व्यवस्थित होती हैं, इनका प्रयोग कर्सर को ऊपर, नीचे, दाएँ या बाएँ ले जाने के लिए करते हैं। इन चारों कुंजियों के अतिरिक्त चार कुंजियाँ और होती हैं, जिनका प्रयोग कर्सर को कण्ट्रोल करने के लिए करते हैं।

(ये कुंजियाँ निम्न हैं)

होम (Home) इसका प्रयोग लाइन के प्रारम्भ में या डाक्यूमेण्ट के प्रारम्भ में कर्सर को वापस भेजने के लिए करते हैं।

(b) एण्ड (End) इसका प्रयोग कर्सर को लाइन के अन्त में भेजने केलिए करते हैं।

(c) पेज अप (Page Up) जब इस कुंजी को दबाया जाता है तो पेज का व्यू (View) एक पेज ऊपर हो जाता है और कर्सर पिछले पेज पर चला जाता है।

(d) पेज डाउन (Page Down) जब ये कुंजी दबाई जाती है तो पेज का व्यू एक पेज नीचे हो जाता है और कर्सर अगले पेज पर चला जाता है।

की-बोर्ड की अन्य कुंजियाँ

कुछ अन्य कुंजियाँ निम्नलिखित हैं

कण्ट्रोल कुंजियाँ (Control Keys-Ctrl) ये कुंजियाँ, अन्य कुंजियों के साथ मिलकर किसी विशेष कार्य को करने के लिए प्रयोग की जाती हैं। जैसे Ctrl + S डॉक्यूमेण्ट को सुरक्षित करने के लिए प्रयोग होती हैं।

एण्टर कुंजी (Enter Key) इसे कीबोर्ड की मुख्य कुंजी भी कहते हैं। इसका प्रयोग उपयोगकर्ता द्वारा टाइप किए गए निर्देश को कम्प्यूटर को भेजने के लिए किया जाता है। एण्टर कुंजी टाइप करने के बाद निर्देश कम्प्यूटर के पास जाता है और निर्देश के अनुसार कम्प्यूटर आगे का कार्य करता है।

शिफ्ट कुंजी (Shift Keys) कीबोर्ड में कुछ कुंजी ऐसी होती हैं, जिनमें ऊपर-नीचे दो संकेत छपे होते हैं। उनमें से ऊपर के संकेत को टाइप करने के लिए उसे शिफ्ट कुंजी के साथ दबाते हैं। इसे कॉम्बीनेशन-की भी कहा जाता है।

एस्केप कुंजी (Escape Key) इसका प्रयोग किसी भी कार्य को समाप्त करने या बीच में रोकने के लिए करते हैं। यदि Ctrl Key दबाए हुए, एस्केप कुंजी दबाते हैं तो यह स्टार्ट मेन्यू (Start Menu) को खोलता है।

बैक स्पेस कुंजी (Back Space Keys) इसका प्रयोग टाइप किए गए डेटा या सूचना को समाप्त करने के लिए करते हैं। यह डेटा को दाएँ से बाएँ दिशा की ओर समाप्त करता है।

डिलीट कुंजी (Delete Keys) इस कुंजी का प्रयोग कम्प्यूटर की मेमोरी से सूचना और स्क्रीन से अक्षर को समाप्त करने के लिए करते हैं। किन्तु यदि इसे शिफ्ट की के साथ दबाते हैं तो चुनी हुई फाइल कम्प्यूटर की मेमोरी से स्थायी रूप से समाप्त हो जाती हैं।

कैप्स लॉक कुंजी (Caps Lock Key) इसका प्रयोग वर्णमाला (Alphabet) को बड़े अक्षरों (Capital letters) में टाइप करने के लिए करते हैं। जब ये की सक्रिय (Enable) होती है तो बड़े अक्षर में टाइप होता है। यदि यह कुंजी निष्क्रिय (Disable) होती है तो छोटे अक्षर (Small Letter) में टाइप होता है।

स्पेसबार कुंजी (Spacebar Key) इसका प्रयोग दो शब्दों या अक्षरों के बीच स्पेस बनाने या बढ़ाने के लिए किया जाता है। यह कीबोर्ड की सबसे लम्बी कुंजी होती हैं।

नम लॉक की (Num Lock Key) इसका उपयोग सांख्यिक की-पैड (Numeric Key pad) को सक्रिय या निष्क्रिय करने के लिए किया जाता है। यदि ये कुंजी सक्रिय होती है तो अंक टाइप होता है और यदि ये कुंजी निष्क्रिय होती है तो अंक टाइप नहीं होता है।

विण्डो कुंजी (Window Key) इसका प्रयोग स्टार्ट मेन्यू को खोलने के लिए करते हैं।

टैब कुंजी (Tab Key) इसका प्रयोग कर्सर को एक बार में पाँच स्थान आगे ले जाने के लिए किया जाता है। कर्सर को पुनः पाँच स्थान वापस लाने के लिए टैब कुंजी को शिफ्ट कुंजी के साथ दबाया जाता है। इसका प्रयोग पैराग्राफ इण्डेंट करने के लिए भी किया जाता है।

शिफ्ट कुंजी (Shift Key) इस कुंजी (Key) को दूसरी कुंजियों के साथ प्रयोग किया जाता है, इसलिए इसे संयोजन कुंजी (Combination) भी कहते हैं।

कैप्स लॉक (Caps Lock) और नम लॉक (Num Lock) को टोगल कुंजी (Toggle Keys) कहते हैं क्योंकि जब ये दबाए जाते हैं तो इनकी अवस्थाएँ (States) परिवर्तित होती रहती हैं।

QWERTY कीबोर्ड में कुल 104 कुंजी होती हैं।

2. पॉइण्टिंग युक्तियाँ (Pointing Devices)

पॉइण्टिंग डिवाइसेज का प्रयोग मॉनीटर के स्क्रीन पर कर्सर या पॉइण्टर क एक स्थान-से-दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए किया जाता है। कुछ मुख्य रूप से प्रयोग में आने वाली पॉइन्टिंग युक्तियाँ; जैसे- माउस, ट्रैकबॉल, जॉयस्टिक, लाइट पेन और टच स्क्रीन आदि हैं।

(i) माउस (Mouse)

माउस एक प्रकार की पॉइण्टिंग युक्ति है। इसका प्रयोग कर्सर (टेक्स्ट में आपकी पोजिशन दर्शाने वाला ब्लिंकिंग पॉइण्ट) या पाइण्टर को एक स्थान-से-दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए करते हैं। इसके अतिरिक्त माउस का प्रयोग कम्प्यूटर में ग्राफिक्स (Graphics) की सहायता कम्प्यूटर को निर्देश देने के लिए करते हैं।

वायर माउस

वायरलेस माउस

माउस सामान्यतः तीन प्रकार के होते हैं।

(a) वायरलेस माउस (Wireless Mouse)

(b) मैकेनिकल माउस (Mechanical Mouse)

(c) ऑप्टिकल माउस (Optical Mouse)

माउस के चार प्रमुख कार्य हैं

(a) क्लिक या लैफ्ट क्लिक (Click or Left Click) यह स्क्रीन पर किसी एक Object को चुनता है।

(b) डबल क्लिक (Double Click) इसका प्रयोग एक डॉक्यूमेण्ट या प्रोग्राम को खोलने के लिए करते हैं।

(c) दायाँ क्लिक (RightClick) यह स्क्रीन पर आदेशों की एक सूची दिखाता है। दायाँ क्लिक का प्रयोग किसी चुने हुए Object के गुण को एक्सेस (Access) करने के लिए करते हैं।

(d) ड्रैग और ड्रॉप (Drag and Drop) इसका प्रयोग किसी Object को स्क्रीन पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए करते हैं।

(ii) ट्रैकबॉल (Trackball) ट्रैकबॉल एक प्रकार की प्वॉइण्टिंग ट्रैकबॉल युक्ति है जिसे माउस की तरह प्रयोग किया जाता है। इसमें एक बॉल ऊपरी सतह पर होती है। इसका प्रयोग कर्सर के मूवमेण्ट (Movement) को कण्ट्रोल करने के लिए किया जाता है।

इसका प्रयोग निम्नलिखित कार्यों मे किया जाता है।

(a) CAD वर्कस्टेशनों (Computer Aided Design Workstations) में

(b) CAM वर्कस्टेशनों (Computer Aided Manufacturing Workstations) में

(c) कम्प्यूटरीकृत वर्कस्टेशनों (Computerised Workstations) जैसे कि एयर-ट्रैफिक कण्ट्रोल रूम (Air-traffic Control Room), रडार कण्ट्रोल्स (Radar Controls) में

(d) जहाज पर सोनार तन्त्र (Sonar System) में

(iii) Freiftech (Joystick)

जॉयस्टिक एक प्रकार की प्वॉइण्टिंग युक्ति होती है जो सभी दिशाओं में मूव करती है और कर्सर के मूवमेण्ट को कण्ट्रोल करती है। जॉयस्टिक का प्रयोग फ्लाइट सिम्युनेटर (Flighsimulator), कम्प्यूटरगेमिंग,जॉयस्टिकCAD/CAM सिस्टम में किया जाता है। इसमें एक हैण्डल (Handle) लगा होता है, जिसकी सहायता से कर्सर के मूवमेण्ट को कण्ट्रोल करते हैं।

जॉयस्टिक

जॉयस्टिक और माउस दोनों एक ही तरह से कार्य करते हैं किन्तु दोनों में यह अन्तर है कि कर्सर का मूवमेण्ट माउस के मूवमेण्ट पर निर्भर करता है, जबकि जॉयस्टिक में, प्वॉइण्टर लगातार अपने पिछले प्वॉइण्टिग दिशा की ओर मूव करता रहता है और उसे जॉयस्टिक की सहायता से कण्ट्रोल किया जाता है।

(iv) प्रकाशीय कलम (Light Pen)

प्रकाशीय कलम एक हाथ से चलाने वाली इलेक्ट्रोऑप्टिकल प्वॉइण्टिग युक्ति है, जिसका प्रयोग ड्रॉइंग्स (Drawings) बनाने के लिए, ग्राफिक्स बनाने के लिए और मेन्यू चुनाव के लिए करते हैं। पेन में छोटे ट्यूब (Small Tube) के अन्दर एक फोटोसेल (Photocell)होता है। यह पेन स्क्रीन के पास जाकर प्रकाश को सेन्स (Sense) करता है तथा उसके बाद पल्स उत्पन्न करता है। इसका प्रयोग मुख्य रूप से पर्सनल डिजिटल असिस्टेण्ट (Personal Digital

अध्याय – 4
वर्ड प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर

माइक्रोसॉफ्ट वर्ड एक नया प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर है। इसे माइक्रोसॉफ्ट द्वारा डाक्यूमेंटस, रिपोर्ट्स, टेक्स्ट, चित्र तथा ग्राफिक्स के निर्माण हेतु बनाया गया है। यह सॉफ्टवेयर टेक्स्ट के फॉर्मेट, उत्पादन तथा उसके निर्माण के लिए उपकरण उपलब्ध कराता है । इन सॉफ्टवेयर में स्पेलिंग व ग्रामर की जांच करने, शब्दों को रेखाकिंत करने, ऑटोफॉर्मेट (Autoformat) करने जैसी कई सुविधाएं मौजूद हैं। (a) विशेषताएं (Reatures)-

I. **फॉरमेटिंग (Formatting)** - टाइप किया हुआ टेक्स्ट किसी भी रूप एवं स्टाइल में बनाया जा सकता है।
2. **ग्राफिक्स (Graphics)** - यह डॉक्यूमेन्टस में चित्र के प्रयोग की सुविधा प्रदान करता है ताकि डॉक्यूमेन्टस ज्यादा उपयोगी बन सके।
3. **तीव्रता** - इस सॉफ्टवेयर में टेक्स्ट तेजी से टाइप होता है क्योंकि इसमें यांत्रिक (Mechanical) वहन (Carriage) प्रक्रिया संब) नहीं रहती है।
4. **संपादकीय विशेशता** - इसमें किसी भी प्रकार का संशोधन (Correction) चाहे टेक्स्ट डालना या परिवर्तित करना हो या उसे डिलीट करना हो, आसानी से किया जा सकता है।
5. **स्थायी भंडारण** - इसमें डॉक्यमेन्ट जब तक चाहें तब तक संग्रहित किया जा सकता है और आवश्यकता पडने पर उसे पुनः प्राप्त किया जा सकता है।

एम.एस. वर्ड चालू करना (To Start Microsoft Word)

M.S. Word प्रोग्राम को चलाने के दो तरीके हैं -

I. Start ® All Programmes ® MS Office ® MS Word

II. माउस प्वांइटर Taskbar पर मौजूद Start बटन पर लाकर क्लिक किया जाए ® इससे स्क्रीन पर पुश – अप ® मेन्यू दिखाई देगा ® पुश अप मेन्यू में माउस प्वांइटर को Programmes विकल्प पर लाया जाए इससे एक और मेन्यू दिखायी देगा ® इस मेन्यू में से MS Office या Office SP का चयन करने से एक अन्य मेन्यू दिखायी देगा जिसमें से MS Word का चयन कर उस पर क्लिक करने से MS Word खुल जाएगा।

यदि डेस्कटॉप पर माइक्रोसॉफ्ट वर्ड का आइकन बना हुआ है तो उस पर माउस प्वांइटर ले जाकर डबल क्लिक करने से MS Word खुल जाएगा।

एम.एस वर्ड की विण्डो में निम्न टूलबार होते हैं -

टाईटल बार: जब हम वर्ड को खोलते हैं तो स्क्रीनशॉट में सबसे ऊपर की पट्टी टाईटल बार/इन्फॉर्मेशन बार (Information Bar) कहलाती है । इसमें प्रोगाम का नाम और खोले गए दस्तावेज का नाम प्रदर्शित होता है।

मेन्यू बार: इसमें एम एस वर्ड के विभिन्न आदेशों के मेन्यूओं के नाम होने हैं वांछित मेन्यू को सिलेक्ट करने संबंधित मेन्यू नीचे की ओर खुल जाता है जिसमें उक्त मेन्यू के सभी आदेश अथवा विकल्प खुल जाते हैं।

स्टैण्डर्ड टूलबार: इसमें वर्ड विन्डों में बारम्बार प्रयोग में आने वाले आदेशों के बटन (New, Open, Save स्पेलिंग और ग्रामर एवं प्रिंट) रहते हैं।

Formatting Toolbar (फॉर्मेटिंग टूलबार) - इसके माध्यम से उपयोगकर्ता पाठ्य को फॉर्मेट कर सकने मे सक्षम हैं। इसके अन्तर्गत फॉन्ट नेम, फॉन्ट साइज, फॉन्ट स्टाइल, मार्जिन, पैराग्राफ, बुलेट्स और नम्बरिंग आदि बटन रहते हैं।

स्क्रलर: इसमें दस्तावेज को निर्धारित आकार में लाए जाने हेतु विभिन्न हाशिए की व्यवस्था होती है यह क्षैतिज तथा उर्ध्वाधर दो प्रकार के होते हैं जिन्हें ऑपरेटर आवश्यकतानुसार परिवर्तित कर सकता है।

पाठ्य क्षेत्र: इस स्थान में ही ऑपरेटर दस्तावेज टाइप तथा क्लिप आर्ट आदि लाकर पेस्ट करता है।

कर्सर: इसे ध्यान बिन्दु भी कहा जाता है तथा पाठ्य क्षेत्र में यह अंग्रेजी के आई अक्षर (I) के रूप में दिखाई देता है। यह Blinking Cursor कहलाता है। यह स्क्रीन पर उस जगह दिखाई देता है जहां कोई व्यक्ति की - बोर्ड से टाइप कर रहा होता है। इसके द्वारा ऑपरेटर पाठ्य क्षेत्र में क्रमशः दाएं, बाएं, ऊपर और नीचे कहीं भी जा सकता है।

स्टेटस बार: इस बार पर दस्तावेज से संबंधित कई अतिरिक्त सूचनाएं दी जाती हैं जैसे पृष्ठ संख्या, लाइन संख्या, पाठ्य क्षेत्र में कर्सर की स्थिति आदि।

स्क्रॉल बार: दस्तावेज जो बडे आकार के होते हैं तथा जिन्हें पाठ्य क्षेत्र में एक साथ देखा नहीं जा सकता है,

-परिवर्तन किए जाने वाले टेक्स्ट को सर्वप्रथम चयनित किया जाता है और मेन्यू बार के Format पर क्लिक किया जाता है। फिर Change Case विकल्प पर क्लिक कर इनमें से किसी एक विकल्प का चयन कर टेक्स्ट में परिवर्तन किया जा सकता है।

-**Sentence Case** - वाक्य के प्रथम अक्षर को बडा करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

-**Upper Case** - सभी अक्षरों को Capital Letters में परिवर्तित किया जा सकता है।

-**Title Case** - वाक्य के प्रथम अक्षर या टेक्स्ट के Title को Capital Letter में परिवर्तित किया जा सकता है।

-**Toggle Case** - यह Capital Letter को Small letter तथा Small Letter को Capital Letter में परिवर्तित कर सकता है।

-**Lower Case** - सभी अक्षरों को Small Letter में परिवर्तित किया जा सकता है।

10. **अन डू तथा रिडू (Undo - Redo)** - यदि किसी किए हुए कार्य को रद्द करना है अर्थात् अपने द्वारा किसी किए हुए काये के पूर्ववत स्थिति में आना है तो Edit Menu में Undo का आदेश या Standard toolbar में उपस्थित Undo विकल्प पर क्लिक किया जाता है।

-अगर रद्द किए गये कार्य को फिर से वापस स्थापित करना हो तो Edit मेन्यू में Redu आदेश दिया जाता है। स्टैण्डर्ड टूलबार में Redu विकल्प पर क्लिक कर भी ऐसा किया जा सकता है।

11. **दस्तावेज देखना (Document Views)** - MS Word में 5 तरह से दस्तावेज को देखा जा सकता है।

i. **सामान्य दृश्य** - यह अक्सर प्रयोग में आने वाला दृश्य है तथा यह Formatting को प्रदर्शित करता है।

ii. **वेब लेआउट दृश्य** - इसमें दस्तावेज ब्राउजर जैसे इंटरनेट एक्सप्लोरर में खुले वेबपेज की तरह दिखता है।

iii. **प्रिन्ट ले आउट दृश्य** - इसमें दस्तावेज प्रिन्ट होने के बाद पेज की तरह दिखता है। इसे पेज ले आउट भी कहते हैं।

iv. **आउटलाइन दृश्य** - इसमें टेक्स्ट आउटलाइन की तरह दिखता है।

v. **रीडिंग ले आउट दृश्य** - यह दस्तावेज को अधिक सुगमता से पढ़ने में सक्षम बनाता है।

हेडर तथा फुटर बनाना -

i. View मेन्यू से Header and Footer पर क्लिक किया जाता है इससे कर्सर हैडर एरिया में चला जाता है और स्क्रीन पर हैडर एवं फुटर टूलबार खुल जाता है।

ii. हेडर बनाने हेतु हेडर एरिया में टेक्स्ट या ग्राफिक्स डाल कर निम्न बटनों पर क्लिक किया जाता है।

a. Insert Page Number - इससे पृष्ठ में संख्या दिया जाता है।

b. Insert Time - इससे समय दिया जाता है।

c. Insert Date - इससे वर्तमान तारीख दी जाती है

d. Insert Auto Text - इससे फाइल नाम ,लेखक नाम या किसी अन्य वस्तु को जोडा जाता है।

- फुटर बानाने के लिए टूलबार के Switch between header and footer बटन पर क्लिक कर उपर्युक्त सारी क्रिया दोहराई जाती है । हैडर एवं फुटर बन जाने पर Close बटन पर क्लिक कर मेन्यू से बाहर निकल जाया जाता है।

वर्ड आर्ट (Word Art) - MS Word में शब्दों का कलात्मक ढंग से कई रंगों में बनाया जा सकता है। इसके लिए वर्ड आर्ट गैलरी का उपयोग किया जाता है। इस गैलरी में कई रंगीन स्टाइल होते हैं जिन्हें चयनित करने के लिए Insert Menu में Picture विकल्प के Drop Down मेन्यू में Word Art विकल्प को चुनकर क्लिक किया जाता है जिससे वर्ड आर्ट गैलरी का डायलॉग बॉक्स खुल जाता है जिसमें से अपनी मनपसन्द स्टाइल को क्लिक कर व्ज्ञ बटन पर क्लिक किया जाता है। इससे Edit Word Art Text का डायलॉग बॉक्स दिखायी देता है। इस डायलॉग बॉक्स से अपनी पसन्द के फॉन्ट, स्टाइल और आकार में कोई भी Text भरा जा सकता है और भरने के बाद OK बटन क्लिक करते ही चुनी हुई स्टाइल में शब्द Document से जुड़ जाते हैं।

एम.एस. वर्ड की शॉर्टकट की

स्टैण्डर्ड टूलबार की - बोर्ड शॉर्टकट -

टूल्स का नाम	की-बोर्ड ऑपरेशन	कार्य/विवरण
Open (File Menu)	Ctrl + O	यह चुने गए फाइल को खोलता है।

Print (File Menu)	Ctrl + P	चुने गये फाइल या दस्तावेज को प्रिन्ट करने के लिए प्रयुक्त होता है ।
Save (File Menu)	Ctrl + S	यह फाइल को उसके नाम, स्थान तथा फॉर्मेट के साथ सेव (Save) करने का कार्य करता है।
New Blank Document	Ctrl + N	इससे टेम्पलेट आधारित फाइल या नयी खाली फाइल बनायी जाती है
Print Preview (File Menu)	Ctrl+F2	फाइल को प्रिन्ट करने से पहले उसे देखना कि वह प्रिन्ट के बाद कैसा दिखेगा।
Spelling and Grammar	F7	यह किसी सक्रिय दस्तावेज में व्याकरण तथा स्पेलिंग की जांच करने का कार्य तथा गलती (Error) को दूर करने हेतु सुझाव देने का काय करता है।
Cut (Edit Menu)	Ctrl + X	किसी टेक्स्ट या चित्र को सक्रिय दस्तावेज (Documents) से हटाता है।
Copy (Edit Menu)	Ctrl + C	यह किसी टेक्स्ट या चित्र को Copy करने के लिए प्रयुक्त होता है।
Paste (Edit Menu)	Ctrl + V	Copy किए गए सामग्री को इच्छित स्थान पर रखने (Paste करने) का कार्य करता है।

Undu (Edit Menu)	Ctrl + Z	पूर्व में किए गए किसी कार्य या कमाण्ड को समाप्त करता है।
Redu (Edit Menu)	Ctrl + Y	Undo की क्रिया को समाप्त करता है।
Hyperlink	Ctrl + K	इसके द्वारा चयनित हाइपर लिंक को Edit किया जाता है या नए हाइपरलिंग को डाला जाता है।
Tables & Borders		यह टेबल्स तथा बॉर्डर टूलबार को दिखलाता है।
Insert Tables		किसी टेबल को बनाया एवं प्रविष्ट किया जाता है।
Insert Excel Worksheet		यह किसी डॉक्यूमेंट में स्प्रेडशीट को डालने अथवा जोडने का कार्य करता है।
Office Assistant	F1	यह 'Help topics and tips' देता है जिसके द्वारा कार्य को पूरा किया जाता है।
Mail Recipient		दस्तावेज की अंतर्वस्तु (Content) को e-mail के रूप में भेजने का कार्य करता है।
Zoom		यह किसी सक्रिय Document के Displayको 10>> से 400>> तक बढाने या घटाने का कार्य करता है।

कुछ अन्य टूल्स तथा की-बोर्ड शॉर्टकट -

जाती है। यह न्यूज ग्रुप्स विषयों को उनके पदक्रम में संगठित करनेके काम में आता है। जिसमें न्यूज ग्रूप का पहला अक्षर प्रमुख विषय की श्रेणी को व उपश्रेणियाँ उपविषय द्वारा दर्शायी जाती है।

(n) सर्च इंजन (Search Engine)

सर्च इंजन इंटरनेट पर किसी भी विषय के बारे में सम्बन्धित जानकारियों के लिए प्रयोग होता है। यह एक प्रकार की ऐसी वेबसाइट होती है, जिसके सर्च बार में किसी भी टॉपिक को लिखते है, जिसके बाद उससे सम्बन्धित सभी जानकारियां प्रदर्शित हो जाती हैं। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं google - http://www.google.comyahoo - http://www.yahoo.com इत्यादि।

इंटरनेट सेवाएँ (Internet Services)

इंटरनेट से उपयोगकर्ता कई प्रकार की सेवाओं का लाभ उठा सकता है, जैसेकि इलेक्ट्रॉनिक मेल, मल्टीमीडिया डिस्प्ले, शॉपिंग, रियल टाइम ब्रॉडकास्टिंगइत्यादि। इनमें में कुछ महत्त्वपूर्ण सेवाएँ इस प्रकार हैं

(a) चैटिंग (Chatting)

यह वृहत स्तर पर भी उपयोग होने वालीटेक्स्ट आधारित संचारण है, जिससे इंटरनेट पर आपस में बातचीत करसकते हैं। इसके माध्यम से उपयोगकर्ता चित्र, वीडियो, ऑडियो इत्यादिभी एक-दूसरे के साथ शेयर कर सकते हैं।उदाहरण- Skype, yahoo, messenger इत्यादि।

(b) वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग (Video Conferencing)

वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूहकिसी अन्य व्यक्ति या समूह के साथ दूर होते हुए भी आमने-सामने रहकर वार्तालाप कर सकते हैं। इस कम्युनिकेशन में उच्च गति इंटरनेट कनेक्शन की आवश्यकता होती है व इसके साथ एक कैमरे, एक माइक्रोफोन, एक वीडियो स्क्रीन तथा एक साउण्ड सिस्टम की भी जरूरत होती है।

(c) ई-लर्निंग (E-learning)

इसके अन्तर्गत कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षण, इंटरनेट आधारित प्रशिक्षण, ऑनलाइन शिक्षा इत्यादि सम्मिलित हैं जिसमें उपयोगकर्ता को किसी विषय पर आधारित जानकारीको इलेक्ट्रॉनिक रूप में प्रदान किया जाता है। इस जानकारी को वहकिसी भी आउटपुट माध्यम पर देखकर स्वयं को प्रशिक्षित कर सकता है।यह कम्प्यूटर या इंटरनेट से ज्ञान को प्राप्त करने का एक माध्यम है।

(d) ई-बैंकिंग (E-banking)

इसके माध्यम से उपयोगकर्ता विश्वभर में कहीं से भी अपने बैंक अकाउण्ट को मैनेज कर सकता है। यह एक स्वचालित प्रणाली का अच्छा उदाहरण है, जिसमें उपयोगकर्ता की गतिविधियों (पूँजी निकालने, ट्रांसफर करने, मोबाइल रिचार्ज करने इत्यादि) के साथ उसका बैंक अकाउण्ट भी मैनेज होता रहता है। ई-बैंकिंग से किसी भी इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस (पीसी, मोबाइल आदि) इत्यादिपर इंटरनेट की सहायता की जा सकती है। इसके मुख्य व व्यावहारिक उदाहरण हैं- बिल पेमेण्ट सेवा, फण्ड ट्रांसफर, रेलवे रिजर्वेशन, शॉपिंग इत्यादि।

(e) ई-शॉपिंग (E-shopping)

इसे ऑनलाइन शॉपिंग भी कहते हैं। जिसके माध्यम से उपयोगकर्ता कोई भी सामान; जैसे- किताबें, कपड़े, घरेलू सामान, खिलौने, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर तथा हेल्थ इन्श्योरेन्स इत्यादि को खरीद सकता है। इसमें खरीदे गए सामान की कीमत चुकाने के लिए कैश ऑन डिलीवरी व ई-बैंकिंग (कम्प्यूटर पर ही वेबसाइट से भुगतान) का प्रयोग करते हैं। यह भी विश्वभर में कहीं से भी की जा सकती है।

(f) ई-रिजर्वेशन (E-reservation)

यह किसी भी वेबसाइट पर किसी भी वस्तु या सेवा के लिए स्वयं को या किसी अन्य व्यक्ति को आरक्षित करने के लिए प्रयुक्त होती है; जैसे- रेलवे रिजर्वेशन में, एयरवेज, टिकट बुकिंग में, होटल रूम्स की बुकिंग इत्यादि में। इसकीसहायता से उपयोगकर्ता के टिकट काउण्टर पर खड़े रहकर प्रतीक्षा नहीं करनी होती। इसे इंटरनेट के माध्यम से किसी भी जगह से कर सकते!

(g) सोशल नेटवर्किंग (Social Networking)

यह इंटरनेट के माध्यम से बना हुआ सोशल नेटवर्क (कुछ विशेष व्यक्ति या अन्य असम्बन्धित व्यक्तियों का समूह) होता है। इसके माध्यम से उस सोशल नेटवर्क के

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKj14nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
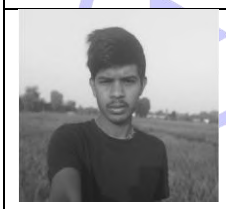	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A.	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A.	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A.	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A.	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A.	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A.	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A.	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A.	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A.	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/d5wdiv

Online order करें – https://shorturl.at/besw4

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE